॥ श्री ॥

शेठ कयवन्ना शाह्नो रास.

दानफल महात्म्यरूप.

तेने

यथायोग्य संशोधन करीने

श्रावक भीमसिंह माणेकें

श्री मुंबईमध्ये

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत् १९४१ ना पौष शुद्ध ९ भृगुवासर.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्री सर्वज्ञाय नमोनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री कयवन्ना शाहनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुखसंपदा, दायक अरिहंत देव ॥ से व करुं सूधे मनें, नाम जपुं नित्यमेव ॥ १ ॥ सम रुं सरसति सामिनी, प्रणमुं सद्गुरु पाय ॥ कयवन्ना चौपै कहुं, दान धरम दीपाय ॥ २ ॥ प्रथम वही धुर मांहीयें, गौतम स्वामीनी लब्धि ॥ सुरगुरुसम श्रीअ नय कुमर, मंत्रीसरनी बुद्धि ॥ ३ ॥ अखुट अत्रुट नं मार सब, शालिभद्रनी रुद्धि ॥ कयवन्ना सौभाग्य तिम, नाम लीये रुद्धि सिद्धि ॥४॥ वारे श्रीमहावीर ने, श्री श्रेणिकने राज ॥ जोगी जमर नर ए थयो, साध्यां आतम काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ कर जोडी आगल रही ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी राजगृही नली, सुर नगरी सम शोहे रे ॥ राजा राज्य प्रजा सुखी, सुर नरनां मन मोहे रे ॥ न गरी० ॥ १ ॥ धनदत्त शेठ वसे तिहां, रिद्धें समृद्धें स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नूरो रे ॥ कोटीध्वज व्यवहारियो, राजा मानें पूरो रे ॥नगरी०॥२॥ चंद्रवदनी मृगलोचनी, सती वसुमती तस नारी रे॥ देव धरम गुरु रागिणी, नमणी खमणी सारी रे ॥नगरी०॥३॥ गालि रालि मुखथी न नीसरे, उंचे साद न बोले रे ॥ कुलवंती सौभागिणी, तेहने कोई न तोलें रे ॥नगरी०॥४॥ सुखलीला नर विलस तां,उपन्यो गर्न उद्योती रे ॥ सूर्यबिंब ज्युं पूरवें,दीप शोहे जेम मोती रे ॥नगरी०॥५॥ निशि नर सूती निंदमें,चंद्र स्वपन तेणें दीतुं रे ॥ जइ जणाव्युं नाथने, फल नांख्युं पीयु मीतुं रे ॥नगरी०॥६॥ त्रीजे मासें मोहलो,उपजे गर्न प्रनावें रे ॥ चोरी चुगली नवि सुणे, तप जप शीयल सुहावे रे ॥नगरी०॥७॥ देव गुरु वांदे सासता, धर्में अमारि पलावे रे ॥ जिन पूजा यात्रा वली, दान मानें सुख पावे रे ॥ नगरी० ॥ ८ ॥ अघरणी आमंबरें, कीधी शेतें ताजी रें ॥ ताजे जाजे जो जनें, सघलां कीधां राजी रे ॥नगरी०॥ए॥ हवे पूरे मासें हुवे, ग्रह आया उंचराशें रें ॥ शुन लगन वेला घडी, पुष्य नक्षत्र चंद्र पासें रे ॥ नगरी० ॥ १० ॥ तिण वेला तिण वसुमती, बेटो सखरो जायो रें ॥ तेजें करी तनु दीपतो, सूरज जेम सवायो रे ॥ नग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

० ॥११॥ रंग रली वधामणां,मंगल गावे गोरी रे ॥ नानाविध नाटक करे,बांध्यां तोरण कोरी रे ॥नगरी० ॥१२॥ कुलदीपक सुत जनमीयो, वाग्यां ताल कंसा लो रे ॥ पहेली ढाल पूरी थई, जयतसी रंग रसालो रे ॥ नगरी० ॥ १३ ॥

॥दोहा॥

॥ दशोटण देवांगना, करी सघलां विधि काम ॥ मावित्रें दीधुं नलुं,कयवन्नो तस नाम ॥१॥ दिनदिन वाधे चंद्र ज्युं, चढते चढते वान ॥ पांच धायें पाली जतो, लाड कोड बहुमान ॥ २ ॥ आठ वरसनो ते थयो, नणे निशाल पोसाल ॥ सकल कला शीखी नली, विद्यानो बहु ख्याल ॥ ३ ॥ सोनागी शिर से हरो, रूपें देव कुमार ॥ नणी गणी पंडित थयो, जोबनमें सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ थाहारा महेला उपर मेह,झ रूखे वीजली हो लाल झ०॥ ए देशी ॥

॥ वसुमती सती एकदिवस के, गजगति मलपती हो लाल के गजगति मलपती ॥ आई प्रीतम पास, बोले जेम सरसती हो लाल ॥ बो० ॥ स्वामी सुणो अरदास,पूरो आश माहरी हो लाल ॥पू०॥ परणावो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कृतपुण्य, बेटी जुवो शाहरी हो लाल ॥बेटी०॥१॥ वहूअर विण घरवास, शूनो रण जाणीयें हो लाल ॥शूनो०॥ वहूअर पडे मुज पाय, तो विकसें वाणीयें हो लाल ॥तो वि०॥ वहू परणे जो पुत्र,देखुं हुं पोतरो हो लाल ॥देखुं०॥ रहे आपणुं घर नाम,वली वंश गो तरो हो लाल ॥वली०॥२॥ धनदत्तें मानी वात,जोशी तेडी करी हो लाल ॥ जोशी०॥ सागरदत्त वड शाह, मागी तस दीकरी हो लाल ॥मागी०॥ कुंवरी जयसिरि नाम,रूपें देवकुंवरी हो लाल ॥ रूपें०॥ परणावी धरी प्रेम,आरिम कारिम करी हो लाल ॥आरि०॥३॥ कुल वंती गुणवंती, शीलें सीतासती हो लाल ॥ शीलें० ॥ चौशठ कलानी जाण, वाणी अमीरस वरसती हो लाल ॥वाणी०॥ नारीने नरतार, जोडी सरखी जडी हो लाल ॥ जोडी०॥ हर गौरी राधा कृष्ण,काम रती पर गडी हो लाल ॥काम०॥४॥ हर्षित हूआं मावित्र,सुज श जग विस्तखो हो लाल ॥ सुज०॥ दीधो महेल आ वास, चित्रामें चितखो हो लाल ॥चित्रा०॥ जाणे देव विमान, दीसे ए दूसरो हो लाल ॥ दीसे० ॥ झलमल झलके जोर, धूनो नवि धूंसरो हो लाल ॥धूनो०॥५॥ विच हिंमोला खाट,सोने रतनें जडी हो लाल ॥सोने०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

झलके हीरा लाल,मोती जड परवडी हो लाल ॥ मो
ती०॥ रंग रली दिन रात,हिंचे वींद वींदणी हो लाल
॥ हिंचे०॥ चूवा चंदन चंपेल,सुवास महके घणी हो
लाल ॥सुवा०॥६॥ सज्जन पुरिजन लोक,सहु संतोषी
या हो लाल ॥ सहु० ॥ ताजां करी पकवान,जली परें
पोषीया हो लाल ॥ जली० ॥ कीयो सखरो विवाह,
शोना जस महमहे हो लाल ॥शोना०॥ बीजी जयत
सी ढाल, कही मन गह गहे हो लाल ॥ कही०॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली उंजा पंमित कनें, शीखे शास्त्र उदार ॥
रहे विषयशुं वेगलो, कयवन्नो सुकुमार ॥१॥ विद्याशुं
राती रहे, मनमें नहीं विकार ॥ देखी जयसिरि दिन
घणे, सासूने कहे सार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग सारंग ॥ थारी अंगीरी कस
चंगी,सुगुणा सावटु मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ महारो नाह नगीनो जाणे, सुगंधो केवडो ॥
सासुजी ॥ सोनागी वडनागी,नहीं को एवडो ॥सा०॥
॥ १ ॥ ए पीतलीयो देव, रंगीलो साहिबो ॥सा०॥ मु
जशुं वात न चित्त, नहीं कोइ बाहिबो ॥ सा० ॥२॥
बोले न मीठा बोल, न खोले हियडलो ॥सा०॥ पीउ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

डो न करे सार, दुःखी रहे जीवडो ॥ सा० ॥ ३ ॥ मु जशुं न करे राग, वैरागी सारीखो ॥ सा० ॥ जोग स जाइ बोडी, जोगीसर आरीखो ॥ सा०॥४॥ करे विद्या अभ्यास, ए पोथी पिंमीयो ॥ सा० ॥ न रहे घरमां जाणी, वटाउ हिंमीयो ॥सा०॥५॥ हुंतो सुगंधी जाइ, नमर नहीं जोगीयो ॥सा०॥ मुजने न माने नाह, रहे वियोगीयो ॥ सा० ॥ ६ ॥ जले सुरंगी देह, सु यौवन जागीयो ॥ सा० ॥ हुं कुलवंती नारी, नाह नीरागी यो ॥ सा० ॥ ७ ॥ हूई चिंताजोर, के काली कोयली ॥ सा०॥ सखी सहेली साथ, हसे हुं दोहली ॥सा०॥८॥ नयणें नावे निंद, के सूतां सेजडी ॥सा०॥ जांखर थइ जूरी जूरी, हुं रत खेजडी ॥ सा० ॥ ए ॥ राचे न रूप सरूप, खल गुल सारिखो ॥ सा०॥ समजे न संसार वात, जोयो में पारिखो ॥ सा० ॥ १० ॥ ए नहीं ब यल बबोल, बयलमां पूतडो ॥ सा० ॥ न रुचे सरस सवाद, जाणे जूई नूतडो ॥सा०॥११॥ जातां न कहे जाउ, आवो नहीं आवतां ॥ सा० ॥ नहीं नयणानुं हेज, न खातां पीवतां ॥ सा० ॥ १२ ॥ आपणी जांघ उघाड, करुं नहीं लाजती ॥ सा० ॥ थां आगें कही वात, बीजाशुं नाजती ॥ सा०॥ १३ ॥ वहूअरना बहु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बोल, शेगाणी सांनली ॥ सा० ॥ शेठ नणी कहे वात, के डुःखनर आकुली ॥सा०॥१४॥ करो कोइ दाय उपाय, ज्युं डुःख दूरें हुवे ॥ सा०॥ आज लगें नोलो ए, वहूने डुहवे ॥सा०॥१५॥ बोले शेठ विमास, व्यसन कोण शीखवे ॥ सा० ॥ ए अणशीखी वात, सहूनें संनवे ॥ सा० ॥१६॥ कुण शिखवे गति हंस, नमर नोगी नला ॥ सा० ॥ मोर पींठ चित्राम, चोर चोरीकला ॥ सा० ॥ १७ ॥ सुणीने शेठनी वाणी, रीशाणी सुंदरी ॥ सा० ॥ जयतसी त्रीजी ढाल, कही ए ठंदरी ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण घणां शेठें कह्यां, पण समजे नहीं नार ॥ हठ जाले नारी जिको, नवि मूके निरधार ॥१॥ नट विट लंपट लालची, जूआरीने लडाक ॥ व्यसनी तेडया धनदत्तें, जेह चढावे चाक ॥ २ ॥ मोहवशें धनदत्त नणे, कयवन्नो सुकुमाल ॥ माल घणो लइ शीखवो, व्यसन कला ततकाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो ॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर पासें रहे आय के, दिनने रातडी ॥ व्य

सनें पाडे पास, करे रंग वातडी ॥१॥ करे मांहोमांहे गोठ, मली सहु गोठीया ॥ खावे पीवे दिन रात, लूटा जिम पोठीया ॥२॥ डुहा कवित्त कल्लोल, गाहा गूढा वली ॥ हास्य तमासा ख्याल, खुशी खेले रली ॥३॥ आवी चोपड मांमी, सारि पासा रमे ॥ उडे होडाहोड, कोडा कोडी धन गमे ॥४॥ हारे जींते एक, खेले व ली जूवटां ॥ करे मदिरापान, पडे जिम उवटा ॥५॥ एक आलापे राग, काफी नट कान्हडा ॥ तन नन रीरी रीरी, करे तान मानडां ॥६॥ चटपट ताल कंसाल, धप मप मामलां ॥ ढम ढम ढमके ढोल, गाजे जि म वादलां ॥७॥ ततथेई नाचे पात्र, हाथ लटकावती ॥ उयलनें पाडे पास, आंख मटकावती ॥८॥ पीवे नां ग तमाकु, तणां वली डोतरां ॥ नरक तणा व्यापार, जाणे दाहोत्तरा ॥९॥ गट गट पीवे दूध, दहींनां मा टकां ॥ नरे कसुंबा घूंट, नरी नरी वाटका ॥१०॥ अ मलमें जाणे कोइ, घूमे नूतडा ॥ लुली लुली पडे मुख लाल, खरा ते विगूतडा ॥११॥ हवे रहे तियांरे साथ, मातो मदमां नरो ॥ कयवन्नो हुउ जेम, योगीनो वान रो ॥१२॥ विणसे मीठो दूध, बिंड कांजी तणे ॥ क स्तूरी कर्पूर, लसण परिमल हणे ॥१३॥ गंगा जल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लूण संगें, सही खारो हुवे ॥ कुरंग संगी चंड्,कलंकी जन चवे ॥ १४ ॥ नट विट साथें कुमार, आव्यो वे श्याघरें ॥ देवदत्ता तिहां देखी, आगत स्वागत करे ॥१५॥ नक्ति युक्ति हाव नाव, मुखें जीजी करे ॥ वे श्या धूतारी नारी, दीठां तन मन हरे ॥ १६ ॥ पाडे मृग ज्युं पास, बोले विकसी हसी ॥ म करो इणरो संग, चतुर कहे जयतसी ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंड्वदनी मृगलोयणी, रूपें गोरी रंन ॥ कय वन्नो जोगी नमर, देखी धरे अचंन ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग शोरठ मलार मिश्र ॥

चालणरी वरीयां नहीं हो लाल, धणवारी
लाल चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडी वेश्या कहे हो लाल, हुं थारे बलि हार हो ॥ कयवन्ना शाह, नलें रे पधास्या आज ॥ हुं दासी हुं ताहरी हो लाल, थें मुज प्राण आधार हो ॥ कय० ॥ १ ॥ ए मंदिर ए मालियां हो लाल, एह हिंमोला खाट हो ॥कय०॥ तन मन धन ए थां हरां हो लाल, हसो वसो गहगाट हो ॥ कय० ॥२॥ हाव नाव वचनें करी हो लाल, चोरी लीयो तसु चि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्त हो ॥ कय० ॥ कयवन्नो वेश्या घरें हो लाल, मोह्यो रह्यो धरी प्रीत हो ॥कय०॥३॥ दासी निजघर मूकी नें हो लाल, अणावे धन कोडी हो ॥कय०॥ मनवंछि त लीला करे हो लाल, ए बिहुं सरखी जोडी हो ॥ कय० ॥४॥ घर कुटुंब सहु वीसर्यां हो लाल, परणी मूकी वीसार हो ॥कय०॥ मावित्र मूक्यां आपणां हो लाल,धिग्धिग् काम विकार हो ॥ कय०॥५॥ खाणां पीणां खेलणां हो लाल, रंग रातां धन जोडि हो ॥ कय०॥ मावित्र तसु धन मोकले हो लाल, वरसां व रस एक कोडि हो ॥ कय० ॥ ६ ॥ बार वरस वोव्या तिकें हो लाल, मावित्रें करी नेह हो ॥कय०॥ दासी मेली सुत तेडवा हो लाल, आवो आपणे गेह हो ॥ कय०॥७॥ मावित्र हूआं मोसलां हो लाल, करो घर घरणीनी सार हो ॥ कय० ॥ कयवन्नो माने नहीं हो लाल, दासी पाछी गइ हार हो ॥कय०॥८॥ वेश्याशुं रातो रहे हो लाल,जिम भमरो वनराजि हो ॥कय०॥ छोडयां मावित्र आपणां हो लाल,छोडयां सहु लाज का ज हो ॥ कय० ॥ ए ॥ बूमा ते नर बापडा हो लाल,जे करे वेश्याशुं रंग हो ॥कय०॥ पांचमी ढाल वेश्या त जो हो लाल, जिम पामो जयरंग हो ॥कय०॥१०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ दासी उदासीन मन, वात कहे घर आय ॥ कुमर वेश्यायें नोलव्यो, आवण वात न कांय ॥ १ ॥ वात सुणी माता हवे,करे विविध विलाप ॥ आप कमाया कम्मडा, करे घणो पश्चात्ताप ॥ २ ॥

॥ ढाल उठी ॥ राग देशाख, घरें आवो मन मोहनां हो धोटा ॥ ए देशी ॥

॥ तुं जीवन तुं आतमा हो बेटा, तुं मुज प्राण आधार बेटा ॥ सास तणी परें सांनरे हो बेटा, तुं वसे हियडा बार बेटा ॥१॥ घरें आवो रे मन मोहन बेटा॥ ए आंकणी ॥ तिलनर जीव रहे नहीं बेटा, किम जावे जमवार बेटा ॥ एकरसो आवो आंगणे बेटा, कर माय डीनी सार बेटा ॥घरें०॥२॥ तुं मुज आंधा लाकडी बेटा, कालेजानी कोर बेटा ॥ आंत्रलूहण तुं माहरे बेटा, किम होये कठिण कठोर बेटा ॥ घरें० ॥ ३ ॥ कुण कहेशे मुज मायडी बेटा, कुणने कहीशुं पूत बेटा ॥ एकें जाया बाहिरो बेटा, नवि रहे घरनुं सूत्र बेटा ॥ घरें० ॥ ४ ॥ तुं पुत्त नोजननें समे बेटा, हीयडे बेसे आय बेटा ॥ जो माता करी लेखवे बेटा, तो घर आय वसाय बेटा ॥ घरें०॥५॥ साले साल तणी परें बेटा,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए घर आहीगाण बेटा ॥ प्राण होशें हवे प्राहुणा बेटा, तुं मन जाण म जाण बेटा ॥घरें०॥६॥ हुं मोसी तुज तातडो बेटा, नयण गमायां रोय बेटा ॥ घर शूनुं करी गयो बेटा, रह्यो परदेशी होय बेटा ॥घरें०॥७॥ बालपणे हुं जाणती बेटा,करशे बूढापण सेव बेटा ॥ गोरु कुगोरु हुवे बेटा, न गणे तुं मा गुरु देव बेटा ॥ घरें० ॥ ८ ॥ जो बालापण सांभरे बेटा, शीयालानी रात बेटा ॥ तो गोडे नहीं मातनें बेटा, चढशुं कलंक विख्यात बेटा ॥ घरें० ॥९॥ पाली लाली महोटो कियो बेटा, धोयां मलने मूत्त बेटा ॥ सगाइ वगाइमां गणी बेटा,तुं म्हारे घरनुं सूत्त बेटा ॥ पागंतरें ॥ खूतो वेश्याशुं विगुत्त बेटा ॥ घरें० ॥ १० ॥ वहू रतन ए ताहरी बेटा, सुगुण सती सुकुलीण बेटा ॥ कोइल ज्युं काली हुइ बेटा, विरहिणी झूरी झूरी क्षीण बेटा ॥ घरें० ॥ ११ ॥ नीचनो संग करावीयो बेटा, ते फल लागां एह बेटा ॥ पाणी पीनें घर पूछवुं बेटा, हूउ उखाणो तेह बेटा ॥ घरें० ॥ १२ ॥ जो विहडे पेटज आपणुं बेटा, तो कलि कथल होय बेटा ॥ ए उखाणो इहां कणे बेटा, ते साचो हुउ जोय बेटा ॥घरें०॥ १३ ॥ हुं पापिणी सरजी अछुं बेटा,दुःख

देखणने काज बेटा ॥ डुःखीयानें उतावलुं बेटा,मरण न दे महाराज बेटा ॥ घरें०॥ १४ ॥ आप कमाइ ए सही बेटा, इहां नहीं किणरो दोष बेटा ॥ पापी जीव रहे नहीं बेटा, सास हुवे तां शोष बेटा ॥ घरें० ॥ ॥ १५ ॥ देव गुरु शीख माने नहीं बेटा, माने नहीं मावित्त बेटा ॥ ढाल उठी कहे जयतसी बेटा, ए व्यसनीनी रीत बेटा ॥ घरें० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ फूरी फूरी पिंजर हूआं, बूढां पण मावित्र ॥ पण पाछो आव्यो नहीं कयवन्नो धरी प्रीत ॥ १ ॥ मात पिता बेहु थयां, काल धरम व्यवहार ॥ कय वन्ना-नारी घरें, पाले कुल आचार ॥ २ ॥ नारी धन मूके तिहां, तिमहिज पतिने सार ॥ धन वीत्युं तब आनरण, मूके सती शणगार ॥ ३ ॥ घरेणां गांठां दे खीनें, अक्का करे विचार ॥ घर खाली हूउ एहनुं, नहीं कमावणहार ॥४॥ करे घर बेठी कांतणुं, लही आपणो प्रस्ताव ॥ विरहिणी नारीनो सही,एहिज मूल स्वनाव ॥५॥ अनुक्रमें अक्कायें सुणी, मरणवात मा वित्त ॥ हवे स्वारथ अण पूगते,जोजो करे कुरीत॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल सातमी ॥ अलबेलानी देशी ॥

॥ हवे ते अक्का मोकरी रे लाल, बेटीनें कहे ते डि ॥ सुविचारी रे ॥ कयवन्नो निर्धन हुउ रे लाल, ढांम तुं एहनी केडि ॥सु०॥१॥ माने वात तुं माहरी रे लाल ॥ म करे एहनो संग ॥सु०॥ रहेजे रीश नरी रूशणे रे लाल,करजे रंग विरंग ॥सु०॥मा०॥२॥ माल विना ए मुआ जिस्यो रे लाल,दीगो न आवे दाय॥सु०॥ अखटु ए असुहामणो रें लाल, काढीश कूटी धकाय ॥ सु० ॥ मा० ॥ ३ ॥ व्यसनीने वेषरची वली रे लाल, मरे न ढोडे मंच ॥ सु० ॥ स्वारथ विण किण कामनो रे लाल, ढालो ढींकर संच ॥सु०॥ मा०॥४॥ किण किणनें चीतारस्यां रे लाल,लख आवे लख जा य ॥सु०॥ नाई मूंमे नव नवा रे लाल,वेश्या ठगि ठगि खाय ॥सु०॥मा०॥ ५ ॥ कहे बेटी सुणो मातजी रे लाल,ए सुकुलीण सुजात ॥सु०॥ नेह न बूटे एहनो रे लाल, पडी पटोले नात ॥सु०॥ मा० ॥ ६ ॥ मन मान्यो ए माहरे रे लाल, बीजो नावे दाय ॥सु०॥ जिम नयणां विच पूतली रे लाल, तिम तन मननें सुहाय ॥ सु०॥ मा० ॥ ७ ॥ लागो रंग मजीठनो रे लाल, ढोह लागे जिम नींत ॥सु०॥ वलगी रहे वेली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रुंखशुं रे लाल, जिम कागलशुं चीत ॥सु०॥ मा० ॥ ॥ ८ ॥ करतार नरतार ए सही रे लाल, न रहे इण विण जीव ॥सु०॥ ढोडुं नहीं हुं जीवती रे लाल,सा चो रंग सदीव ॥सु०॥मा०॥ए॥ एक दिन जो अलगो रहे रे लाल,तो नयणें नावे नींद ॥सु०॥ कूड कहुं तो आखडी रे लाल,हू वींदणी ए वींद ॥सु०॥मा०॥१०॥ रहे रहे ढानी ढोकरी रे लाल,झोकरी बोले एह ॥सु०॥ नाचणरो किशो राचणो रे लाल, ज्यां लागो त्यां नेह ॥ सु० ॥मा०॥ ११ ॥ रीश त्रिशूलो चाढीयो रे लाल, करी आंख्यां राती चोल ॥ सु० ॥ गालो रांम बोले घ णी रे लाल, जाणे फूटो ढोल ॥सु०॥मा०॥१२॥ मो सी पोसी पापिणी रे लाल,न चले बेटी जोर ॥सु०॥ बुड बुड बुड बुड बोलती रे लाल, सुखणी मांमयो सोर ॥सु०॥मा०॥१३॥ कयवन्ना उपरें हवे रे लाल, करे ढोबारण. ढोर ॥ सु० ॥ बेटी रोवे देखीनें रे लाल, ज्युं पग देखी मोर ॥सु०॥मा०॥ १४ ॥ रूती कूती जेहवी रे लाल, खूती लोन लबक्क ॥सु०॥ अ क्का उंबलका आणती रे लाल, करे तडक्क नडक्क ॥ सु०॥मा०॥१५॥ पापिणी सापणी ज्युं उछले रे लाल, लागुं जाणे नूत ॥सु०॥ कहे पडयो रहे घेरमें रे लाल,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रोगी सोगीरो सूत ॥सु०॥मा०॥१६॥ घर झूरो मठ पिंमीयो रे लाल, वात करे अदनूत ॥सु०॥ बली न बाटी उथले रे लाल, खाधो पीधो धन सूत ॥सु०॥ मा०॥१७॥ यतः ॥ वस्त्रहीनोऽह्यलंकारो, घृतहीनं च नोजनं ॥ कंठहीनंच गांधर्वं,नावहीना च मित्रता॥१॥ धूत्ताधूत्त नंफा नंफः, बेलामांहि बयल ॥ एता ठंदा चालवे, तोतुं नाह ठयल ॥२॥ ढाल पूर्वली ॥ लूखो झूको नावे नहीं रे लाल,ताजां धान्य घृत गोल॥सु०॥ अमल आगां रूडां लूगडां रे लाल,जोइजें तेल तंबोल ॥सु०॥ मा० ॥१८॥ सरशे वरशे तो विना रे लाल, जा आपणें घर बार ॥सु०॥ मावित्र मूआं ताहरां रे लाल, कर घर कुल आचार ॥सु०॥मा०॥१९॥ ॥दोहा॥ संवन तिहां न जाइयें,जिहां कपटका हेत ॥ ज्यांलो कली कणेरकी,तन राता मन श्वेत ॥ १ ॥ हंसा तो तब लग चुगे,जब लग देखे लाग ॥ लाग विहूणा जे चुगे,हंस नहीं ते काग ॥२॥ बग उमाया बा पडा,कण सरोवर कण तीर ॥ हंस नमरा सव किम सहे, अमरष जाह शरीर ॥ ३ ॥ जीह नहीं लज्जा नहीं, नहीं रंग नहीं राग ॥ ते माणस तिम ठंमियें, जिम अंधारे नाग ॥४॥ कडुआं फलां कुमाणसा,जास

अवगुण जांही॥ आडी दीजें नूंय घणी,दूर वसीजें जाइ ॥५॥ ढाल पूर्वली॥ इंम सुणी कवी नीसस्यो रे ला ल, अमरष आणी शरीर ॥सु०॥ तेजी न सहे ताज णो रें लाल, हंस सहे नहीं नीर ॥सु०॥मा०॥२०॥ आंख ऊघाडी चिंतवे रे लाल, धिग्धिग् वेश्या नेह ॥सु०॥ गिरिवाहला वादल बांहज्युं रे लाल,अंतें दीखा वे छेह ॥सु०॥मा०॥२१॥ दोहा॥ वेश्यानेह जूआर धन, काती अंबर छार॥ पाबल पहोर अगत घर, जा तां न लागे वार॥१॥ ढाल पूर्वली॥ धनदत्तनुं घर पूछतो रे लाल, आवे मारग मांह ॥सु० ॥ नगरशेठ मल्यो तिसें रे लाल, कुमर पूछे वली राह ॥सु०॥मा० ॥२२॥ शेठ कहे जाणे नहीं रे लाल, तुं परदेशी लो क ॥ सु० ॥ जुनुं हूतं घर तेहनुं रे लाल, नाम गयुं वली फोक ॥सु०॥मा०॥२३॥ शेठ शेठाणी बे मूआं रे लाल, निवड्यो पुत्त कुपुत्त ॥सु०॥ धन खाधुं सघ लुं तिणें रे लाल, वेश्यासेंती विगूत्त ॥सु०॥मा०॥२४॥ निज श्रवणें अवगुण सुण्या रे लाल, धिग्धिग मुज अवतार ॥सु०॥ नयणें बे आंसु जरे रे लाल, जाणें मोतीहार ॥सु०॥मा०॥२५॥ तीरथजनत पिता कह्यो रे लाल, वली विशेषें मात ॥सु०॥ न करी सेंवा चाकरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे लाल, नली न कीधी वात ॥सु०॥मा०॥२६॥ ईम चिंतवतो आवीयो रे लाल,निजघर बार कुमार ॥सु०॥ शिर धूणी सोचे घणुं रे लाल, जोतो पोलि प्रकार ॥सु०॥मा०॥२७॥ पडया पडी पण पाधरो रे लाल, चाले चतुर सुजाण ॥सु०॥ व्यसन साते तजो सातमी रे लाल, ढालें जयतसी वाण ॥सु० ॥ मा० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धणी विहूणां धवल घर, ढह हूआ ढम ढेर ॥ हूउं आमण दूमणो, देखि देखि चउ फेर ॥ १ ॥ जि ण घरमें वली दीसता, जाजां दासी दास ॥ गह मह शोना वइगइ, देखी हूउं उदास ॥ २ ॥ "यतः ॥ जिण के खंधे कूदते, करते लाड हजार ॥ लाडणहारे रह गए, गये लडावणहार ॥३॥" हवे एकांतें बारणें, उ नो रही अमोल ॥ कुंअर कानें सांनले, निजनारीना बोल ॥ ४ ॥ कहे कामिनी सूडा नणी, ऊठ ऊठ प्रना त ॥ रंग रंगीला सूअडा, सुण सुण मोरी वात ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग गोडी, सोरठ मिश्र ॥
सुवडानी देशीमां ॥

॥ सुण सुण सूवटीया, सूवटीया नाई ॥ तुं छे चतुर सुजाण होरेहां,रूप रूडुं रलीयामणुं ॥सु०॥सू०॥ मीठी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तोरी वाणि होरे हां, बोले जीभडी पडवड़ा ॥सु०॥१॥ ॥सू०॥ नीली थारी पांख होरे हां, चांच राती तीखी ताहरी ॥सु०॥सू०॥ रुडी थारी आंख होरे हां, राती माती रंग वाटली ॥सु०॥२॥सू०॥ सोने मढावुं ताहरी चांच होरे हां, दूधें पखालुं ताहरी पांख ॥सु०॥सू०॥ तुने भिडावुं हाथ होरे हां,विनतडी सुण माहरी॥सु०॥ ॥३॥सू०॥ मानीश तुभ उपगार होरे हां,जाये जिहां पियु माहरो ॥सु०॥सू०॥ उडे पांख पसारी होरे हां,म करे ढील तुं मारगें॥सु०॥४॥सू०॥ कहेजे मुज संदेश होरे हां,अबला तुज घर एकली ॥सु०॥सू०॥ छे विरहि णीने वेश होरे हां, झुरी झुरी जंखर पंखरी ॥ सु०॥ ॥५॥ सू०॥ तजीयां तेल तंबोल होरे हां,खानां पीनां खेलणां ॥सु०॥सू०॥ छांड्या अंग रंगरोल होरे हां, पीठी अंजण मंजणां ॥ सु० ॥६॥ सू०॥ तोड्या हीर चीर हार होरे हां, लागे शणगार अंगार सारिखा ॥ सु० ॥ सू०॥ विरहा करवत धार होरे हां, रस कस खारा विष हुआ ॥ सु० ॥७॥ सू०॥ सूवे नहीं सुख सेज होरे हां, नयणें नावे नींदडी ॥ सु० ॥ सू० ॥ धरती पीयुशुं हेज होरे हां, दुःख धरती धरती सूवे ॥ सु०॥८॥सू०॥ वली कहेजे तुज नारी होरे हां, तुमने

कह्या छे बोलडा ॥ सु० ॥ सू० ॥ तें लोपी कुलकार होरे हां, लेहेणाथी देणो पडी ॥ सु०॥९॥ सू० ॥ तें पांचारी साख होरे हां, हुं परणी हुती जोइनें ॥सु०॥ सू०॥ तजी न अवगुण दाख होरे हां,कलंक चढाव्यां मेहणां ॥ सु०॥१०॥सू०॥ में तुजनें नरतार होरे हां, कल्पतरु ज्युं आदर्यो ॥सु०॥ सू०॥ आक एरंम अनु सार होरे हां, ऊंचो नीच परें नीवडयो ॥ सु०॥११॥ सू०॥ गांठे बांध्यो ताण होरे हां,रतन अमूलख जा णीने ॥ सु०॥ सू०॥ पण हुउ पबर जाण होरें हां, पाच हूउ काच सारिखो ॥सु०॥१२॥ सू०॥ हंस हूउ जाणे काग होरें हां, सोनो शीसो निवडयो ॥ सु०॥ सू०॥ वेश्याशुं करि राग होरे हां, नाम गमायो बाप रो ॥सु०॥१३॥सू०॥ कां सरजी किरतार होरें हां, कंत विहूणी कामिनी ॥ सु०॥ सू० ॥ दुःखिणी कोइ कोइ नारी होरे हां, पण सघली छे मो पछें ॥ सु०॥ ॥ १४ ॥ सू०॥ किणनें दीजें दोष होरे हां,घाट कमाइ आपणी ॥ सु० ॥ सू० ॥ केहो करुं अपशोष होरे हां, लहिणुं लाभे आपणुं ॥ सु० ॥ १५ ॥

॥दोहा॥ वालम तणो विछोह,किरतार तुं कदि नां जशे ॥ कहे नें कदी संयोग,करशे ते निरणय कहो ॥१॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोकिल मेघ ज्युं मोरध्वनि,दक्षिण पवनज हुंति ॥ चंद किरण तंबोल रस, विरही ए न सहंति ॥ २ ॥ डुस्सह वेदन विरहकी, साच कहे कवि माल ॥ जिणकी जोडी विछडे, तिणका कवण हवाल ॥ ३ ॥ एक आंख्यां दीठां दहे, वाला दहे परदेश ॥ सज्जन डुर्जन बिहुं दहे, हियडा काहु करेश ॥ ४ ॥ उपर आंबा मोरीया, तले निझरणा झरंत ॥ साजन पाखें दीहडा, ताढा तोही तपंत ॥ ५ ॥ छाती मांहे शाल, क्षण क्षणमें खटके घणां ॥ करस्यां कवण हवाल, मलियां विण मटशे नहीं ॥६॥ जो जस लीनो होय, तो साहेब वशरंजीयें ॥ घणुं अंधारुं तोय, मोर लवे घन गज्जीयें ॥७॥ नेदा लगरी नूख,नूछलिए नांजे नहीं ॥ देखीजें तो डुःख, जो गाजाणी तलमिले ॥ ८ ॥ जो नेटुं किरतार, करुं विनती आपणी ॥ अईहो सरजणहार,औजम युंही जायसी ॥९॥ वयणा तणा विचार, नांखंतां नेद्या नहीं ॥ सावजडा संसार,पातलीया नहीं पालउत ॥ १० ॥ मुखके कहे कहावनें, कागद लखी न जात ॥ आपने मनशुं जानीयो,मेरे मनकी बात ॥११॥

॥ ढाल पूर्वली ॥ सू० ॥ कहेजो मुज आशीष हो रे हां, कोडी वरस प्रभु जीवजो ॥ सु०॥ सू०॥ मत क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रजो मन रीश होरे हां, जलुं जाणो करजो जिकूं ॥ सु०॥ १६ ॥ सू०॥ हुं थाहारी बलिहार होरे हां, कही संदेशनें लावजो ॥ सु०॥ सू०॥ वाट जोवा उनी बार होरे हां, कुशलें वेगा आवजो ॥ सु० ॥ १७ ॥ सू० ॥ सतीय शिरोमणि जाण होरे हां, सीता सती जिम निर्मली ॥ सु०॥सू०॥ जयतसी करे सुवखाण होरे हां, शीललीला ढाल आठमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ दीधी आपणी बांह, चोरी चडी कर मेलतां ॥ पण जिम तनरी ठांह, तिम नवि राखी तो कन्हे ॥ १ ॥ फुरके माबुं अंग, तिण अवसर नारी तणुं ॥ चिंते आज सुरंग, सही मलशे मुज वालहो ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ राग मारु, सोरठमिश्र ॥ नलराजानें देश होजी प्लवंग हुता पलाणीया ॥ ए देशी ॥

॥ बेठी कांतण ठाण होजी, नारी मन निश्चल करी लाल ॥ना०॥ सुणि सुणि विरहिणी वाणि होजी, कुमर वज्राहत अति हूउ लाल ॥ कु० ॥ १ ॥ कुमर गयो घर मांहें होजी, शौच धरंतो शंकतो लाल ॥ शौ०॥ चंद ग्रह्यो ज्युं राहु होजी, मुख विलखे ठबी शोचती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाल ॥ मुख० ॥ २ ॥ शंकाणी सुकुलीणी होजी, सतीय शिरोमणि चिंतवे लाल ॥ स० ॥ ए घर पुरुष प्रवीण होजी, किम आव्यो वही आंगणे लाल ॥ किम० ॥ ३ ॥ जा तुं ताहरे गाम होजी, पूरी अपूठी करी कहे लाल ॥ पू० ॥ नहीं पर पुरुषांरो काम होजी, ए घर छे सतीया तणां लाल ॥ ए० ॥ ४ ॥ सरणाई सुहडा होजी, केशर केश भुयंगमणि लाल ॥के०॥ चडशे हाथ मूआ होजी, सतीय पयोधर कृपण धन लाल ॥ स० ॥ ५ ॥ बीजा नर सहु वीर होजी, बोलुं न बोल बीजासेंती लाल ॥ बो० ॥ सगी नणदीरो वीर होजी, कूड कहुं तो आखडी लाल ॥ कू०॥६॥ हुं प्रिया हुं तेह होजी, कयवन्नो बोले हसी लाल ॥ क० ॥ धन तुं राखी रेह होजी, चंद नामो तें चाढीयो लाल ॥चंद०॥७॥ दीगे घाट सुघाट होजी, सासुरो जायो सही लाल ॥ सा०॥ हुउं रंग गह गाट होजी, कामिनी तन मन विकसीयां लाल ॥ का० ॥ ॥८॥ जिम अति वूठे मेह होजी, नवनव रंग धरती धरे लाल ॥ न० ॥ जयश्री तिम पीयु नेह होजी, नवमी ढाल जयरंग नणे लाल ॥ न० ॥ ९ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल दशमी ॥ वधावो हे सुहव गावशुं ॥
अथवा, अयोध्या हे राम पधारीया ॥
अथवा ए देशी ॥ सीयालानी देशी ॥

॥ आज वधावो माहरे, आज जाग्युं हे सखि मा हरुं जाग्य के ॥ पाहुडो हे घरें आवीयो ॥ए आंकणी॥ ङुःख दोहग दूरें टल्यो,आज पायो हे सखि सुख सौ जाग्य के ॥पी०॥१॥ सुरतरु फलीयो आंगणे, आज दूधें हे सखि वूठा मेह के ॥ पी० ॥ मुह मांग्या पासा ढल्या, आज उल्लसी हे सखि देह सनेह के ॥पी०॥ ॥२॥ तप जप व्रतनी आखडी, आज हूआ हे सखि पूरा सूंस के ॥पी०॥ तूठा गुरुनें देवता,आज पूगी हे सखि मननी हूंश के ॥पी०॥३॥ धन्य वेला धन्य ए घडी, आज धन्य धन्य हे सखि दिवस उमाह के ॥ पी० ॥ बार वरसनें बेहडे, मुज मलियो हे सखि विछ डयो नाह के ॥पी०॥४॥ मोतीयडें वधावीयो,गोरी गावें हे सखि मली मली गीत के ॥पी०॥ वर मांमणे घर मांमीयुं, रंग चीतख्या हे सखी जीत सचित्त के ॥ पी० ॥ ५ ॥ विच विच दीयें उलंनडा, सहु काढी हे सखि मननी जास के ॥पी०॥ नाह मल्यो आज मा हरो, रंग रलीयां हे सखि लील विलास के ॥ पी० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ६ ॥ रंगमां भीगो रूषणो, जाणे दूधमां हे सखि साकर ड्राख के ॥पी०॥ अलीयां गलीयां पूछतां,हसी बोल्या हे सखि मधुरी जाष के ॥ पी० ॥ ७ ॥ साजन सहु आवी मल्या, हुउ हर्षित हे सखि कुटुंब अपार के ॥पी०॥ बांध्यां तोरण बारणें, शोना वधी हे सखि नगर मझार के ॥ पी० ॥ ८ ॥ मनवंछित सुख नो गवे, दीये दाननें हे सखि आदर मान के ॥ पी० ॥ गह मह घर वसती हूइ, घर शोहे हे सखि पुरुष प्र धान के ॥पी०॥ए॥ जयश्री शील शोना नली, गुण गावे हे सखि सहु नर नार के ॥ पी० ॥ दशमी ढाल कही जयतसी, शील सरिखुं हे सखि को न संसार के ॥ पी० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयश्री सम नारी न का, कयवन्नो नरतार ॥ जोडी बिहुं सरखी जुडी, तूगे श्रीकिरतार ॥ १ ॥ हवें वेश्यानी दीकरी,लडी अक्का घर गेढि ॥ आवी वर घर पूछती, हूइ जयश्रीनी जोडि ॥२॥ बिहु नारी सरखी जुडी, वधतो प्रेम सनेह ॥ कयवन्नो सोनागीयो, लो क कहे धन्य एह ॥ ३ ॥ आंख बिहु सम नारि बे, माने चतुर सुंजाण ॥ पण हाल हुकुम जयश्री तणो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हाथें घर मंमाण ॥ ४ ॥ हवे जयश्रीना नाग्यथी, सुत उपन्यो गर्नवास ॥ कयवन्नानें पण हुउ, आव्यां पूरो मास ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ राग सोरठ ॥ रहो
रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ नाह नगीनो एक दिनें, देखी अति दीलगीर लाल रे ॥ जयश्री नारी मलपती, आवी प्रीतम तीर लाल रे ॥ १ ॥ पूठे पदमणी प्रिय नणी, हसता देखी सदीव लाल रे ॥ आज न बोलो क्युं हसी, थें प्रीतम मुज जीव लाल रे ॥ पूठे० ॥ २ ॥ चिंता कांइ नवी वसी, कांतो मुजशुं रीश लाल रे ॥ आज निहेजो वालहो, रूठो विश्वावीश लाल रे ॥ पूठे० ॥ ३ ॥ खासी दासी हुं ताहरी, खुन पड्यां द्यो शीख लाल रे ॥ विण बोल्यां जीवुं नहीं, न नरुं पाठी वीख लाल रे ॥ पूठे० ॥ ४ ॥ प्रीतम कहे सुण पदमणी, तोशुं केही रीश लाल रे ॥ तुं घर मंमण माहरे, हियडे रहे निश दीस लाल रे ॥ पूठे० ॥ ५ ॥ तोशुं मन मोही रह्युं, नमर ज्युं फूल सुगंध लाल रे ॥ चिंता धननी मुज मनें, दोहिलो ठे घर बंध लाल रे ॥ पूठे० ॥ ६ ॥ कुल घर महोटुं आपणुं, वड वडां कीधां काम लाल रे ॥ पा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चांमें परगट नलां, बाप दादानां नाम लाल रे ॥ पू
जे० ॥ ७ ॥ आव्यो गयो पही प्राहुणो, रायल देवल
काज लाल रे ॥ खरच वरच कीधा विना, न रहे घर
नी लाज लाल रे ॥ पूजे० ॥ ८ ॥ दानें याचक जय
नणे,सेव करें सहु कोय लाल रें ॥ ढलकती ढाल अ
ग्यारमी, सुणतां जयरंग होय लाल रे ॥ पूजे०॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ एकण दीधे बाहरो, नाम न लेवे लोय ॥ दी
धारी देवल चढे, इम बोले सहु कोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ राग गोडी केदारो मिश्र ॥

॥ जंबू द्वीपना नरतमां ॥ ए देशी ॥

॥ दाम नहीं गांठ माहरे,दाम करे सहु कामो रे॥
दामें तूसे देवता, दाम वधारे मामो रे ॥१॥ दाम न
लो संसारमां, दीधां दोलत होय रे ॥ ग्रह गोचर पी
डा टले, दाम वशें सहु कोय रे ॥ दा० ॥ २ ॥ रूपैये
माने राजवी, रूपैये हुवे घृत गोलो रे ॥ रूपैये धरम
करम हुवे, रूपैये सदा रंगरोलो रे ॥ दा० ॥ ३ ॥ दो
कडा वाला जगतमां, दोकडे मादल वाजे रे ॥ दोकडे
स्नात्र पूजा हुवे, दोकडे जिनगुण गाजे रे ॥ दा० ॥
॥ ४ ॥ दोकडे माने नारजा,लाडी हाथ बें जोडे रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दोकडा पासें लोनणी, रूडी कडाका मोडे रे ॥ दा०
॥ ५ ॥ पैसा आइ माई कह्या, पैसा कामणगारा रे॥
पैसा वणज करे वली, पैसे जिमण सारां रे ॥ दा०
॥६॥ रुण न करुं शिर माह्रे, रुणथी रहे मुख का
लो रे॥ रुणथी नावे नींदडी, रुणथी सहीयें गालो रे
॥ दा० ॥ ७ ॥ नारी मंफण नाहलो, धरतीमंफण
मेहो रे ॥ पुरुषां मंफण धन सही, इणमां नहिं सं
देहो रे ॥ दा० ॥ ८ ॥ खूटयुं धन खातां सही, घरमें
सबली खोटो रे ॥ वणज व्यापार न को चले, दुःजर
पेटने कोटो रे ॥ दा० ॥ ए ॥ हुं जाइश परदेशडे, धन
खाटीश एक चित्तो रे॥ घरमां थें बिहुं बेनडी, रहेजो
रूडी रीतो रे ॥ दा० ॥१०॥ जयश्री सुणी प्रिय बोल
डा, घरेणां गांठां उतारी रे ॥ पियु आगल मूकी कहे,
ए काया माया ताहारी रे ॥ दा० ॥ ११ ॥ खाउ पीउ
खरचो वली, मांमो वणज व्यापारो रे ॥ नाह कहे
धन्य तुं सती, तुं मुज प्राण आधारो रे ॥ दा० ॥१२॥
घरणुं गांठुं वेचतां, लाज घटे हुवे खुवारी रे ॥ हुं
चालीश तिणें तुज वसु, घरनी मांम ठे सारी रे ॥
दा० ॥ १३ ॥ नारी मनावी नाहले, चालणरो कीयो
संचो रे ॥ माथे लाग्यने चाहडी, न टले कर्मप्रपंचो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ दा० ॥ १४ ॥ तिण अवसर परदेशमें, धनपति सारथवाहो रे ॥ फेरे इंम उद्घोषणा, नगरीमांहे उ छाहो रे ॥ दा० ॥ १५ ॥ धन खाटण जो मन हुवे, तो आवो मुज साथो रे ॥ वणिज जला परदेशमां, चडशे बहु धन हाथो रे ॥ दा० ॥ १६ ॥ कयवन्नो सुणी वातडी, मनमां हरखित हूउं रे ॥ समजी घरणी पण हवे,चालणरो दीयो दूउं रे ॥दा०॥१७॥ शुभ शुं कनें आयां साथमां,जयश्री आवी साथो रे ॥ देवलमां सेज पाथरी, शाह बेठो तिण माथो रे ॥दा०॥१८॥ घरथी बाहिर आवीयो,एहीज पंथ न आघो रे ॥ बार मी ढालें जयतसी,लखमी खाटण लागो रे ॥दा०॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुलवंती कंतने, अनी कहे कर जोड ॥ थें सिधावो सिद्धकरो, पूरा थारा कोड ॥ १ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ राग मारु ॥ नोजराजाना गीतनी ॥ हाथीयां रे हलके आवे प्राहुणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ वहेली वलण करजो वालहा जी,मत रहेजो पर देश ॥ आवतां जातांशुं घर मूकजो जी, कुशल खेम संदेश ॥वहे०॥१॥ चोर चुगल बहु धूरत माणसांजी, मत करजो विश्वास ॥ खाणें पीणें खरच म सांकजो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी, जिम सो तिम पंचास ॥वहे०॥३॥ देव गुरु स्मरण करी शासतोजी, जिनधर्म मनमां धार ॥ विच विच मुने पण चितारजो जी, मत मूको वीसार ॥ वहे०॥ ॥ ३ ॥ कुशलें खेमें वहेला आवजो जी, धन खाटी सुविचार ॥ थें मुज जीवन थें मुज आतमाजी, थें मुज प्राण आधार ॥वहे०॥४॥ धन्य वेलाने धन्य वली ते घडीजी,धन्य दिन धन्य ते मास ॥ नयणें दरिसण थांरो देखशुंजी, ते दिन फलशें मुज आश ॥ वहे०॥ ॥ ५ ॥ वली अवधारो मुज विनतीजी, हुं पतिभक्ति नारी ॥ जिमण जूठण वेला थांहरीजी, हुं जीमिश निरधार ॥ वहे० ॥ ६ ॥ हेजें देशो हाथें आवीने रे, तेवारें खाशुं पान ॥ चूआ चंदन परिमल थां मल्यां जी, मेवा विगय पकवान ॥ वहे० ॥ ७ ॥ देवगुरु वांदीश प्रहसमे सासतीजी, देहरे घृत दीवेल ॥ तप जप आंबिल नीवी एकासणांजी, धर्में हुवे प्रिय मेल ॥ वहे०॥८॥ गौरी समरे हर रति कामनेंजी, रुक्मिणी समरे कान ॥ चकवी चकवो राम सीता मनेंजी, तिम मुज मन स्वामी ध्यान ॥ वहे०॥ ९ ॥ मेघ तणी परें उन्नी थांहरीजी, हुं जोवुं छुं वाट ॥ उलुं आवे मुनें थांहरीजी, घरें आवजो धन खाट ॥ वहे० ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हली मली शीख करी नारीयें जी, मूकती वली नी शास ॥ फरी फरी जोवे मुख फेरीनेंजी, रह्युं मनडुं पीयु पास ॥ वहे० ॥ ११ ॥ पाछा वलतां पग बे लड थडेजी, मोहनी करम जंजाल ॥ जिम तिम आवे घर आपणेजी, सुखें गमावे काल ॥ वहे० ॥ १२ ॥ दोहा ॥ चाल सखी उंण फूंपडे, साजन वलीया जेण ॥ मत कोइ मीठो बोलडो, लागो हुवे तिणेण ॥ १ ॥ रे मंदि र रे मालीयां, हवें तुं मग न नरेश ॥ जिण कारण अमें आवतां, सो चाल्या परदेश ॥ २ ॥ जुग विछुरत सारी मरत, यहे काठकी प्रीति ॥ पै सज्जन विछुरे ना मरे, संब न एह विपरीत ॥ ३ ॥ मीठी ढाल रमी मन तेरमीजी, जयतसी जयजय कार ॥ फलशे भाग्य भलें सौभाग्यशुंजी, ते सुणजो अधिकार ॥ वहे० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे देवलमें चिंततो, घर घरणीरो हेज ॥ निशि नर सूतो निंदमां, कयवन्नो सुख सेज ॥ १ ॥ रुद्धिवंत अपुत्रिउ, कोई साहूकार ॥ परभवें पोहोतो प्रवहणे, आव्या सम्माचार ॥ २ ॥ तिणरी माता पाजीयो, पंथीनें धन आप ॥ वहू चारे मेली कहे, मत रोजो चुप चा प ॥ ३ ॥ जो सांभलशे राजवी, तो लेशे धन रोक ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाम गाम जाशे सहु, तिणे मत करजो शोक ॥ ४ ॥ घर आणी को राखश्यां, नवलो नर अद्नूत ॥ पुत्रज होशे ताहरें,रहेशे घरनुं सूत्त ॥ ५ ॥ कहे वहूरो सासू जणी, कीजें केम अकाज ॥ कहे मोशी ए कारणें, करतां कांइ न लाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ चंद्रावलानी देशी ॥

॥ वहू चारे साथें करीरे, मोसी जाली मांगो ॥ नगरी सारी सोजती रे, आवी साथमां रंगो ॥ आवी साथमां रंग सुरंगी, देखे नर सहु हुइ हुइ खंगी ॥ केई जंगी केई जंगी, नजर न आवे कोइ सुचंगी ॥१॥ जी कुमरजी जीरेजी ॥ पूरव पुण्य पसाय, सुखसंपत्ति मले रे ॥ रंग रली उछरंग,आज सहु फले रे ॥आ०॥ ए आंकणी॥ देवल मांहे ते गई रें,सूतो दीगो सेजो ॥ रूप रूडुं रडीयामणुं रे, कयवन्नो धरी हेजो ॥ कयवन्नो धरी हेज उठायो, पण नवि जाग्यो निंदें गायो ॥ तिम हिज आण्यो मंच बिठायो, घरमां मेली रंग मचायो ॥ जी० ॥ २ ॥ चारे नारी चउपखें रे, नारी बेठी मंचो ॥ कयवन्नो हवे जागीयो रे, देखे तेह प्रपंचो ॥ देखे तेह प्रपंच विलासो, ए कुण ख्याल विनोद तमासो ॥ महोटां मंदिर महेल मेवासो,चिहुं दिशि जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वे आसो पासो ॥ जी० ॥३॥ रंग रंगीलां मालीयां रे, चित्रामांरी ढोलो ॥ जाणे विधातायें रच्यां रे, मोती जामर जोलो ॥ मोती जामर जोल तेजाली, विच विच प्रोई लाल प्रवाली ॥ जब जब जाबख जूब रसा ली,नला नला गोंख नली चित्रशाली ॥ जी० ॥ ४ ॥ सखरा बांध्या चंड्वा रे, मखमलरा पंचरंगो ॥ नवनव नातें जातरा रे, पाथरणां अतिचंगो ॥ पाथरणां अ ति चंगा फलके, जरबाफ जाजम कसबी फलके ॥ लां बी फूलनी माला लालके, धूप धाणानी सलीयां चल के ॥ जी० ॥ ५ ॥ चंड्वदनी मृगलोचनी रे, नर यौ वनमें जेहो ॥ नासा दीप शिखा जिसी रे, सोवन व रणी देहो ॥ सोवन वरणी देह रे सारी, चिहुं दिशि निरखे चारे नारी ॥ रूपें रूडी देव कुमारी, मानवणी जिण आगें हारी ॥ जी० ॥ ६ ॥ पायें नेउर रणझणे रे, काने कुंमल सारो ॥ नकबेसर शिर रास्वडी रे, हि यडे नवसर हारो ॥ हियडे नवसर हार रे सोहे, मोह नगारी मनडुं मोहे ॥ रंग रंगीली चित्तडुं चोहे, मुख दीठां ए डुःख विगोहे ॥ जी० ॥ ७ ॥ मगन हूउ देखि देखिनें रे,मनमां करे विचारो ॥ ए सुहणो के हुं सही रे, आव्यो स्वरग मझारो ॥ आव्यो स्वरग मझार रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देखे, मोती माणक रयण अलेखे ॥ सोनुं रूपुं केहे लेखे, ए नहीं गेह विमान विशेखें ॥ जी० ॥ ८॥ शंका मनमां कपनी रे, हुं आव्यो किण गामो ॥ सूज न कांइ सूधी पडे रे, कयवन्नो मुज नामो ॥ कयवन्नो मुज नाम रे सोचे, शिर धूणीनें दिल संकोचे ॥ वली वली मनशुं आप आलोचे, हवे किहां नासुं खूणे खोचे ॥ जी० ॥ ए॥ तेहवे आवी मोसली रे, बोले मीठा बोल ॥ ए घर ए वहू ताहरी रे, करो इणशुं रंग रोल ॥ करो इणशुं रंगरोल रे बेटा, भाग्यशुं हुई ताहरी भेटा ॥ पहेरो उढो खाउ पेटा, तुं घर साहेब सहु तुज चेटा ॥ जी०॥ १० ॥ में समरी कुल देवता रे, माग्यो पुत्रप्रधानो ॥ तूठी आणी तुं दीयो रे, वालो जीव समानो ॥ वालो जीव समान रे जाया, ए छे ताहरी जाया माया ॥ जीव छे एकनें जूई काया, तुने दीठे में सुख पाया ॥ जी० ॥ ११ ॥ सुणि सुणि वात शोहामणी रे, हरख्यो हिये कुमारो ॥ किण खाटी को भोगवे रे, जुवो कर्मविचारो ॥ जुवो कर्म विचार रे चंगा, उंदर खणि खणि मरे सुरंगा ॥ भोगवे पेसी भोग जुयंगा, बैल मरे वही चरे तुरंगा ॥ जी० ॥१ २॥ कय वन्नो सुख भोगवे रे, दिन दिन अति गहघाटो ॥ वात

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विसरी गइ वांसली रे, हिंचे हिंमोला खाटो ॥ हिंचे हिंमोला खाट रे रूडी, नाग्यनी वात न कांइ कूडी ॥ चारे नारी रहे सजूडी, बाहें खलके सोवनचूडी ॥ जी० ॥ १३ ॥ पति नक्ति चारे जणी रे, चारे मोहन वेलो ॥ चारे बेठी नाहशुं रे, रमे सारी पासा खेलो ॥ रमे सारी पासा खेल रे नेला, मांहो मांहि होइ स मेला ॥ चूआ चंदन तेल फूलेला, शोल सिणगार ब नावे वेला ॥ जी० ॥ १४ ॥ चारे बेटा चिहुनें हूआ रें, बार वरस घर वासो ॥ हवे स्वारथ सख्यो मोकरी रे, जूवो करे तमासो ॥ जूवो करे तमासो रे गा ढो, कहे वहूरोने ए नर काढो ॥ बेटे थये कलंक म चाढो, ज्युं मुज होवे हियडो टाढो ॥ जी० ॥ १५ ॥ दोहा ॥ निज स्वारथके कारणे, कूदे वाड कुरंग ॥ रस कस लै त्यागे तुरत, ए निर्गुणके अंग ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ वहूआंशुं लडे सासती रे, नांम ज्युं लाज न सांखो ॥ विलगे जाणे नाहरी रे, रातडी करि करि आंखो ॥ रातडी करि करि आंखो रे मोटी, मनमां खोटी सोटी जोटी ॥ पावे न किणनें पाणी लोटी, न दीये किणने रोटी दोटी ॥जी०॥१६॥ खावे न पीवे लोजणी रे, खरच न विरच लगारो ॥ मत आवे एह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राहुणो रे,जडी राखे घरबारो ॥ जडी राखे घर बार रे खडकी, मांहेथी बोले तडकी नडकी ॥ रहे घर बा हिर सहुको अडकी, जोगी जती सहु जावे नडकी ॥ जी० ॥ १७॥ चौदमी ढाले जयतसी रे,वहूआं ने ससने हो ॥ मनमांहें एम चिंतवे रे, विषवेलि विरती एहो ॥ विषवेली विरती एह रे सासु, ए नर निर्मल ज्युं ज ल आंसुं ॥ जीव ने माहारो ए नहीं फासु,मनरंग रा तो फूल ज्युं जासु ॥ जी० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणी सासुना बोलडा, उपन्युं दुःख अपार ॥ चारे वहू मली सामटी, करे आलोच विचार ॥ १ ॥ सासु डूई श्वानणी, विरती करे बिगाड ॥ आपें किम ढांमी शकां, बार वरसनां लाड ॥ २ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ हमीरियानी देशी ॥

॥ वहूअर हली मली वीनवे, प्रीतम केम ठंमाय ॥ सासूजी ॥ बार वरसनी प्रीतडी,जीव रह्यो रंग लाय ॥ सा० ॥ वहू० ॥ १ ॥ पहेलो पोतें तें कीयो, सबल अन्याय अकाज ॥ सा० ॥ घरघरणें घर राखीयुं, कीधी न कुलनी लाज ॥ सा० ॥ वहू० ॥ २ ॥ जाई परायें घर वस्यो, गरज सरी कोड लाख ॥ सा० ॥ का

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म सखुं दुःख वीसखुं, हवे क्युं देखाडो काख ॥ सा० ॥ वहू० ॥ ३ ॥ लाज रही लखमी रही, बेटा दूआ वली चार ॥ सा० ॥ किरतार तूठो ए दीयो, ना ग्य वडे नरतार ॥ सा० ॥ बहू० ॥ ४ ॥ हवे तो एहने छोडतां, न बने कांई वात ॥ सा० ॥ नेह न तूटे जीव तां, जीनी साते धात ॥ सा० ॥ वहू० ॥ ५ ॥ इण वि ण ए घर कारिमुं, शूनुं जाण मसाण ॥ सा० ॥ इण विण म्हें पण कारमी, गुण विण लाल कबाण ॥ सा० ॥ वहू० ॥ ६ ॥ खाणां पीणां पहेरणां,काजल तिलक तंबोल ॥ सा० ॥ इण विण सहु अलखाम णां, लागे विसरे तोल ॥ सा० ॥ वहू० ॥ ७ ॥ एह ध णी माहारे इण नवें, सो बोलें एक बोल ॥ सा० ॥ थें साचो करी जाणजो, कहां छां वाजते ढोल ॥ सा० ॥वहू०॥८॥ जोर वहे ते मोकरी, तडकी नडकी बोले तूटी ॥ वहूजी ॥ रहो रहो आपणी लाजमां, काढीश तींगो कूटी ॥व०॥वहू०॥९॥ घर माहरुं धन माहरुं, आथ न हुंति इण साथ ॥व०॥ ए कुण हुं कुण श्यो हवे, दारी नरडे साथ ॥व०॥वहू०॥१०॥ जार फीटी दूउ घर धणी, विलसे लील विलास ॥व०॥ पण बल बल काढो बाहरो, आश करुं खास पास ॥ व०॥ व

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हू०॥११॥ काढे मोला ज्युं माकिणी,शंखिणी मांम्यो सोर ॥ व० ॥ त्रोड फोड मांमी घणी, वहुआं उपर ठोर ॥व०॥ वहू०॥ १२ ॥ पाली न रहे पापिणी,लाज शरम नहीं हाक ॥ सा० ॥ गाली रांमरा बोलडा, बो ले कडूआ आक ॥ सा० ॥ वहू० ॥१३॥ बार वरसने छेहडे, लागी पनोती अंग ॥ सा० ॥ जंग करे खाइ नंग ज्युं, रंगमें पाडयो नंग ॥ सा० ॥ वहू० ॥ १४ ॥ मोशीशुं चाले न क्युं, नहीं वहुआंरो जोर ॥ सा० ॥ सबला झीपे जग सही, निबला करे निहोर ॥ सा०॥ वहू० ॥ १५ ॥ चारे नारि विचारीनें, रतन लेइ फल कंत ॥सा०॥ जल जाये जूडं फाटीनें, गुण तीयांरो तंत ॥सा०॥वहू०॥१६॥ चारे लाडु मोटा कीया, घाल्यां र तन विचाल ॥सा०॥ मूकी उंशीशे कोथली,उंहिज मं चक हाल ॥सा०॥वहू०॥१७॥ सासु कहे फासुं हवे, राखुं नहीं घरमांह ॥ सा० ॥ बारे वरसें ते वली, उं हिज सारथ वाह ॥ सा० ॥ वहू० ॥ १८ ॥ आवी प ड्यो तिण थानकें, साथ सबल गज गाह ॥ सा० ॥ निशि नर सूतो निंदमें, देखी कयवन्नो शाह ॥सा०॥ वहू० ॥ १ए ॥ वहू उगाडी जगाडीनें, उपाडयो ते मंच ॥ सा० ॥ तिण देवलमें आणीनें, मूक्यो तिण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हींज संच ॥ सा० ॥ वहू० ॥ २० ॥ ससनेही चारे जणी, रोती जरि जरि आंख ॥ सा० ॥ सासुअें आवी घरें, रही नीशासा नाख ॥ सा० ॥ वहू० ॥२१॥ यतः ॥ सयणां एहिज पारिखुं, फरी पाछुं जोवंत ॥ मुख हसतां नयणें मले, तन टाढक उपजंत ॥ १ ॥ नयणें जे साजन मले, कुण नहीं जूले लेज ॥ प्रीत रीत पाले नही, माणस रूपें बेल ॥ २ ॥ पीयु पासें सूतां थकां,हेज नही लवलेश ॥ जैसो कंतो घर रह्यो, तैसो गयो विदेश ॥ ३ ॥ ढाल पूर्वली॥ पन्नरमी ढालें जयतसी, तेहिज मूलगो वेश ॥ सा० ॥ जैसा कंता घर रह्या, तैसा गया विदेश ॥ सा० ॥ वहू० ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुलवंती सुंदरी, लइ श्रीफलनें फूल ॥
वरधन बेटो साथ लइ, गइ जोशी रे मूल ॥१॥

॥ ढाल शोलमी ॥ सात सोपारी हाथ, पंमघो पूछण धण गईजी ॥ ए देशी ॥

॥ पूछे बे कर जोड,श्रीफल आगें मूकिनेंजी ॥ जोशी आलस छोड, जुवो प्रश्न एक माहरुंजी ॥१॥ पतडो हाथेंजी जालि,लगन मांम्यो मेष वृष सही जी॥ तंत पाड्यो ततकाल, आदित्य सोम मंगल मुखेंजी

॥ २ ॥ थें बो गुणह गंनीर, जाणो वात त्रिभुवन त णीजी ॥ माह्री नणदनो वीर,कहोनें वीरा कदि आ वशेंजी ॥ ३ ॥ मानीश तुज उपगार,देइश सखर वधा मणीजी ॥ जाणो ज्योतिष सार, कहो फल पीयर माह्रांजी ॥ ४ ॥ वरष पूरा हूवां बार, पीयु चाल्यो परदेशडेजी ॥ नावी चीठी समाचार, सार सुधी कांहिं नहींजी ॥५॥ चाल्यो धननें काज,माह्रो वरज्यो नवि रह्योजी ॥ देश विदेशांमांज,घरें घरणी किम होशेजी ॥ ६ ॥ वायें लू उनाले, वरसालें मेह ऊरहरेजी ॥ शी त पडे शीयाले, किम सहेशे नाह माह्रोजी ॥ ७ ॥ सूती पडुं जंजाल,जाणुं पियु घर आवीयोजी ॥ हसी मलीयो हेजाल,ऊबकी जागी देखुं नहींजी ॥८॥ दैव न दीधी पांख, नहीं तो ऊडी मलुं नाह्नेंजी ॥ जोवुं नरी नरी आंख,बोडुं न पासो जीवतीजी ॥९॥ सही न देती शीख,पहेली इम जो जाणतीजी ॥ नरण न देती वीख, बेहडो जाली राखतीजी ॥ १० ॥ किम जाये जमवार, वरष समी वोले घडीजी ॥ नाह विहू णी नार, रस विण जाणे शेलडीजी ॥ ११ ॥ अंगूग नी आग,कदी आवे माथा लगेंजी ॥ पियु विण नहीं सौनाग्य,यौवनियुं किम जायशेजी ॥ १२॥ न रहे को

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परदेश, बारां वर्षां ऊपरांजी ॥ मूके घर संदेश, के आवे पोतें वहीजी ॥ १३ ॥ घर आव्या सहु कोइ, आडोसी पाडोसीयाजी ॥ माहारो परण्यो सोइ, ना व्यो हजी वाट जोवतांजी ॥ १४ ॥ जोषी चतुर सु जाण,लगन विचारी बोलीयोजी ॥ बहेनी सुण मुज वाणि, म करीश चिंता पीयु तणीजी ॥ १५ ॥ जाणुं ज्योतिष सार, फलशे वंछित ताहरोजी ॥ आज सही निरधार, मलशे तुजनें नाहलोजी ॥ १६ ॥ सांजली मी ठी वाण, झाबुं अंग पण फरकीयुंजी ॥ आज सही सुविहाण, वीछड्यो मलशे वालहोजी ॥ १७ ॥ सोने मढावुं जीन, अमीय नरुं मुख ताहरुंजी ॥ देशुं स दा आशीष, चिरंजीवो जोशी पंमियाजी ॥ १८ ॥ उ ल्लसी आवी घर बार,हियडुं हरख उमाहियुंजी ॥ सां जलीयुं तेणी वार, उहिज साथ फरि आवीयुंजी ॥ १९ ॥ हली मली बिन्हे नारी, चाली तन मन उल्लसीजी ॥ शुकन हूआं श्रीकार,साथमां आवी मलपतीजी ॥ २० ॥ तंबु मेरा सुविशाल,देखीनें मन उल्लसीजी ॥ शोलमी ढाल रसाल, मलशे पीयु नणे जयतसी जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कयवन्नो जाग्यो हवे, देहे कोण हवाल ॥ कि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हां घर घरणी चारे अरु, किहां मणि मोती माल ॥१॥ किहां कूर कपूरशुं प्रेमरस, किहां हींमोला खाट ॥ सही धूतारी मोकरी, ए सहु रचीया घाट ॥ २ ॥ ले तरीयो लेह दाखीयो, सोचें पडयो संदेह ॥ सूतारी पामा जणे, हवे किम जावुं गेह ॥ ३ ॥ नारी देवल में गइ, दीठी तेहिज सेज ॥ बेगो प्रीतम उपरें, दीठो मन धरी हेज ॥४॥ बोले माता हेजशुं, बेटा ए तुज बाप ॥ खोले बेगो आवीनें, टलिया दुःख संताप ॥५॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ राग मलार ॥ काजलनी कोरेंज लाल ॥ ए देशी ॥

॥ बोले पदमणी बे जणी रे, आज सफल अव तार ॥ रंगनर जाग्यो रे सनेह ॥ किरतारें आणी मेल्यो रे, नाग संयोग नरतार ॥ रंग० ॥ १ ॥ सुर तरु फलीयो आंगणे रे, दूधें वूठा मेह ॥ रंग० ॥ मुह मांग्या पासा ढल्या रे, उल्लसीया रोम रोम देह ॥ रंग० ॥ २ ॥ विछडी मलियां सुख घणुं रे, नयणें जाग्युं हेज ॥ रंग० ॥ अचरिज मनमां उपन्युं रे, ए तो एहिज सेज ॥ रंग० ॥ ३ ॥ गहेनो गाढो लामो लीलनो रे, अंग सुरंग सुतेज ॥ रंग० ॥ नाणां गणां ढुंमी ढुशे रे, चिंता न तिणरी लेज ॥ रंग० ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मेल नहीं हाथें पगें रे, मील न लागी खेह ॥ रंग० ॥ मारग खेह दीसे नही रे, चलके फलके देह ॥ रंग० ॥ ॥ ५ ॥ धवला खंध बग पांख ज्युं रे, चोखा हीरनें चीर ॥ रंग० ॥ जाणे रह्यो रंग मेहेलमें रे, खाधी खंमने खीर ॥ रंग० ॥ ६ ॥ ताजां पान आरोगीयां रे, राता दांतनें होठ ॥ रंग० ॥ सुंधे भीनो साहेबो रे, जाणे न गयो गाम गोठ ॥ रंग० ॥ ७ ॥ पूछे पद मिणी वालहा रे, कांइ उडी आव्या आकाश ॥ ॥ रंग० ॥ के बेसी आव्या विमानमें रे, के बेसी रह्या आवास ॥ रंग० ॥ ८ ॥ पाछो उत्तर द्ये नहीं रे, छ दां तनें मुह पोल ॥ रंग० ॥ हुंहुंहुं कहे गुंग ज्युं रे, मु खें न बोले बोल ॥ रंग० ॥ ए ॥ हुं हुं वाणी पण ति हां रे, मीठी लागे डाख ॥ रंग० ॥ गुंगो बेटो बापनें रे, बाप कहे ते लाख ॥ रंग० ॥ १० ॥ पूरव पुण्य तणे उदें रे, तूटचा करम अंतराय ॥ रंग० ॥ सत्तरमी ढाल जयतसी रे, राग मलार कहाय ॥ रंग० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चालो घर घरणी कहे, फाल्या संबल सेज ॥ धणी धणीयाणी सुत मली, आव्यां घर घणें हेज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ शाह बेगो घर आवीनें, हवे तसु सुत सुकुमा
र ॥ वरष दूउ अगीआरनो, जणे गुणे नीशाल ॥ २ ॥
॥ ढाल अढारमी ॥ हरीला वैरीनी देशी ॥
॥ जयश्री लीधी कोथली रे,लीधा लाडू चार रें ॥
सोहागण ॥ देखी सुत कहे मातनें रे लाल, द्ये शा।
रामण सार रें ॥ सोहागण ॥ १ ॥ नारी मनमें गह
गही रे, सखरा मोदक तंत रे ॥ सो० ॥ रस मूके दी
तां जीनडी रें लाल, मबके माढनें दंत रे ॥ सो० ॥
ना० ॥ २ ॥ एक मोदक दियो सुत जणी रे, माता
धरी उल्लास रें ॥ सो० ॥ लाडु लईने चालीयो रे ला
ल, जणवा पाठक पास रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ ३ ॥
लाडु खातां नीसखुं रें, दीतुं रतन अनूप रे ॥सो०॥
ए मुज पाटी घूटणुं रे लाल, थाशे लागी चूंप रे
॥ सो० ॥ ना० ॥ ४ ॥ तूटी पडियुं हाथथी रे, कं
दोई कुंममांहि रे ॥ सो० ॥ जल फाटयुं जलकंतथी
रे लाल, लीयुं कंदोइ उछांहि रे ॥ सो०॥ ना०॥ ५ ॥
द्ये मुज पाटी घूटणुं रे, बोले नोलो बाल रे ॥सो०॥
रढ लीधी मूके नहीं रे लाल, रोइ रोइ बोले गाल रे
॥ सो० ॥ ना० ॥ ६ ॥ लाडु पेंमा घारी रेवडी रे, मी
री मीगाई दीध रे ॥ सो० ॥ मीठे वचनें नोलावीनें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे लाल, रतन अमूलक लीध रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ ॥ ७ ॥ हवे मांमी गादी आखलो रे, उपरें मांमी था ल रे ॥ सो० ॥ नारी जिमाडे नाहनें रे लाल, नवा निपाइ शाल दाल रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ ८ ॥ पहेलां पीरस्यां नांजिनांजिनें रे,लाडू तेहिज खंत रे ॥सो०॥ नीसरीयुं तिण मांहिथी रे लाल, लाल रतन फल कंत रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ ए ॥ कहे नारी धन्य पीयु तुमें रे, धन लाव्या नलें सूल रे ॥ सो० ॥ चोर न देखे कुत्ता जसे रे लाल, अल्प नार बहु मूल रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ १० ॥ डुंडुं कयवन्नो कहे रे, सूजे क माइ आप रे ॥ सो० ॥ बीजो अक्षर न उच्चरे रे लाल, डुंडुं पडी चुप चाप रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ ११ ॥ नारी रतन देखाडीयां रे, रूडां मूल्य अमूल्य रें ॥सो०॥ हरखें कयवन्नो कहे रे लाल, बोले मीठा बोल रे ॥ ॥ सो०॥ ना०॥ १२ ॥ भाग्य जागे जिहां तिहां नलां रे, आपद संपद जोय रे ॥ सो० ॥ परमेसर पुण्यें पा धरो रे लाल,वाल न वांको होय रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ ॥१३॥ खाये पीये बिलसे हसे रे, दान दीये धन को डी रें ॥ सो० ॥ पति भगति घण बे जुडी रे लाल, सखरी सरखी जोडी रे ॥ सो० ॥ ना० ॥ १४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दुःख दोहग दूरें टल्यां रे, सखरो जग सौभाग्य रें ॥ सो० ॥ ढाल अढारमी ए कही रे लाल, जयरंग जाग्युं भाग्य रे ॥ सो० ॥ भा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाम सवायुं नीसर्युं, पसरी सबल प्रसिद्धि ॥ पूरव पुण्य पसाउले, जडी वली ऋद्धिने सिद्धि ॥१॥ मति संबाही आपणी, मांड्या वणज व्यापार ॥ घर वाधी लखमी घणी, दिन दिन दैदैकार ॥ २ ॥

॥ढाल उगणीशमी॥ चतुर चितारोरूप चीतरे रे॥देशी॥

॥ तिण अवसर तिण नगरमें रे, वाजे ढंढेरानो ढोल रे ॥ फिरतो चोराशी चावे चोहटे रे, बोले एह वा बोल रे ॥१॥ आजरे निवाजे राजा तेहनें रे, आणे जे हाथी ठोडाय रे॥ लहे अर्ध राज राजकुंवरी रे, जाणे जे कोइ उपाय रे ॥ आज० ॥ २ ॥ सेंचाणक गज श्रेणिकतणो रे, पाणी पीवा नदी मांहि रे ॥ पेठो आघो जलमां क्रीडतो रे, शुंढ उलाले कमाहि रे ॥ आज० ॥ ३ ॥ पग जालीनें ताण्यो मगले रे, स बलो तंतू जीव रे ॥ जोर होवे जलमां तेहनुं रे, हा थी पाडे रीव रे ॥ आज० ॥ ४ ॥ चतुर विवेकी जोग जोगीया रे, विद्यावंत कलावंत रे ॥ आणे महोरा ज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

डी उषधी रे, सिद्धि साधक मंत्र तंत्र रे ॥ आज० ॥
॥ ५ ॥ खलक मल्या लोक हलकिनें रे, एक शूरा एक
वीर रे ॥ पण नवि चाले जोरो केहनो रे, सहु उना
रह्या तीर रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ लाख उपाय करी लोनी
या रे, केलवे हकुमत कोडि रे ॥ कोडि मनावे देवी
देवता रे, पण फिका पडया मुख मोडि रे ॥ आ० ॥ ७ ॥
राजमंमण गजराज ले रे, श्रेणिक करे दुःख सोर
रे ॥ कोइ सनूरो पूरो पुण्यनो रे, हाथी ढोडावे जोर रे
॥ आ० ॥ ८ ॥ ऐरावणनो साथी हाथीयो रे, उत्तम जा
ति सुविनीत रे ॥ राज्य निःफल इण बाहिरो रे, श्रे
णिक हूउ सचिंत रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ दाय उपाय बुद्धि
केलवे रे, मली मंत्रीने नूपाल रे ॥ इणि परें नांखी
उंगणीशमी रे, जयरंग ढाल रसाल रे ॥ आ० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कंदोइ पडहो सुणी, मनमां करे विचार ॥ धू
आ फुंका कुण करे, लालच लोन अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ राग खंनाती ॥ शोहेलानी देशी ॥

॥ कंदोई पडहो छिव्यो रे, रतन अमूलक पासो रे,
राज रुद्धि सुख नोगवुं रे, मनमां महोटी आशो रे
॥ १ ॥ तोरें कोडले परणुं राय कुंवरी रे, जली ना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्य दशा ए जागी माहरी रे ॥ ए आंकणी ॥ राजा मन हरखित दूउ रे, कौतुक लोक निहाले रे ॥ गो दडीमां गोरख सही रे, अर्जुन जे गाय वाले रे ॥ तो रे० ॥ २ ॥ रतन जतनशुं संग्रही रे, चाल्यो घणो गहगाट रे ॥ पेगे नदीमां पाधरो रे,फाटयुं जल दश वाट रे ॥ तोरे० ॥ ३ ॥ तंतू मत्स्य अलगो रह्यो रे, जल विण जोर न कोइ रे ॥ बूटयो सींचाणक हाथीयो रे. जलमांहे पसरयो सोइ रे ॥तो०॥४॥ हरख्यो नगरी नो राजीयो रे, हरख्यां नगरी लोक रे ॥ दरबारें आ एयो हाथीयो रे, पुण्यें टल्ले रोग शोक रे ॥ तोरे०॥५॥ कंदोइनें कहे राजवी रे, किहांथी रतन अमूल रे ॥ कहे साचुं नहीं तुं जणी रे, मारीश कूडे बोल रे ॥ ॥ तोरे० ॥ ६ ॥ लहेणाथी देणे पडयुं रे, मनमां र ही सहु आश रे ॥ हैहै दैव तें शुं कीधुं रे,जांग्यो मां रुयो घरवास रे ॥ तोरे० ॥ ७ ॥ कूड कपट जायगा नहीं रे, कूडे विणसे गोत रे ॥ होत भुजे कूडुं बोलतां रे, कूडे पडे जात जोत रे ॥ तोरे० ॥ ८ ॥ साच वडुं सं सारमां रे, साचे बीक न शंको रे ॥ फुरे साच वाच जती सती रे,धन्य साच काच निकलंको रे ॥तोरे०॥९॥ मंत्र यंत्र फुरे साचथी रे,साच सम मित्र न कोय रें॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रण वन राउल देवलें रे, वाल न वांको होय रे ॥ तोरे० ॥ १० ॥ इम जाणी साचुं बोलीयो रे, कहे कंदोइ एम रे ॥ कयवन्नासुत पासथी रें, रतन लीयुं में प्रेम रे ॥ तोरे० ॥ ११ ॥ साच वचन मुख बोलतां रें, जग सघलुं वश होइ रे ॥ इम सुणी राजा श्रेणिकें रे, ठोडयो तेह कंदोइ रे ॥ तोरे० ॥ १२ ॥ धन्य धन्य जे साचुं चवे रे, तिणरे कोइ न तोलें रे ॥ वीश विश्वा ढाल वीशमी रे,मीठी जयतसी बोले रे ॥तोरे०॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ टूटो साच पसायथी, हवे कंदोई तेह ॥ कुशलें खेमें आवीयो, रंगरली निज गेह ॥ १ ॥ श्रीश्रेणिक राजा हवे, मनमां करे विचार ॥ में बोली वाचा तिका, विघटे नहीं संसार ॥ २ ॥ साधु सतीने सूरिमा, ज्ञानी अरु गजदंत ॥ उलटी पूठें नहीं फरे, जो जग जाय अनंत ॥ ३ ॥ पहिला बोले बोलडा, पछी न पाले जेह ॥ कखाणो ते नर लहे,सिंधू साटुं जेह ॥४॥ वाचा अविचल पालवा,मंत्री अभय कुमार ॥ घर मूकी तेडावीयो, कयवन्नो दरबार ॥ ५ ॥ पुण्याइ प्रगटी थइ,आव्यो शाह कृतपुण्य ॥ राजानें पायें पडयो, सहु बोले धन्य धन्य ॥६॥ पूछी गाढी वारता,जाण्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए वड शाह ॥ परीयागत लखमी घणी, नागो तोही वराह ॥ ७ ॥ जाग्युं नाग्य वली तेहनुं, तूठो श्रेणिक राय ॥ परणावे निज पुत्रिका, नलुं लगन जोवराय॥ ८॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ कुल्लहो कृष्ण कुल्लही राधिका ॥ ए देशी अथवा ॥ सोहलानी देशी ॥

॥ रंग नरी रंग नरी परणे हो रायनी कुंवरी जी, धन्य कयवन्नो शाह ॥ वरनें वरनें कन्या हो हथलेवो मल्यो जी, बेठां चोरी मांह ॥ रंग० ॥ १ ॥ धवल धवल गावे हो नारी गोरडी जी, वाजे मंगल तूर ॥ जानीवड जानीवड मानी सघला मल्या जी, प्रगटयो आनंद पूर ॥रंग०॥ २॥ वींदने वींदने वींदणी छेहडा बांधीयाजी, जाणे कीधो बंध एह ॥ हुं ताहारी हुं ताहारीने वली तुं माहरोजी, जीव एक जूदी देह ॥रंग० ॥ ३ ॥ रंगरस रंगरस चोथुं मंगल वरतीयुं जी, कन्या फरी वर केडि ॥ वरनें वरनें पूठें परठे कामिनी जी, वसती हुवे नावें वेडि ॥रंग०॥४॥ दायजो दायजो दीधो घोडा हाथीया जी, वली दीधां गाम हजार ॥ पंचरंग पंचरंग वाघा हो मुकुट शोहामणा जी, कुंमल हार शिंगार ॥रंग०॥५॥ नोजन नोजन नक्ति हो जिमण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नव नवांजी, कूर कपूर नरपूर ॥ आरिम आरिम कारिम कीधां रंगछुंजी, लाडें कोडें पडूर ॥रंग०॥६॥ वंछित वंछित फलियां हो टलियां डुःख सहु जी, हलीयां मलीयां हेज ॥ वलीयां वलीया वखत रंग रलीयां करें जी, रंग महेल सुख सेज ॥ रंग० ॥ ७ ॥ त्रण ऋतु त्रण ऋतुनां हो सुख नोगवे जी, त्रिहुं नुवनें साजाग्य ॥ त्रणेही त्रणेही नारी हो सारी अप्सराजी, पति नगति प्रेम राग ॥ रंग० ॥ ८ ॥ त्रणेही त्रणेही शोहे तिम मन मोहती जी, पान सोपारी काथ ॥ रंग रस रंगरस शोहे त्रणे एहवी जी, खीर खांम घीनी साथ ॥ रंग० ॥ ए ॥ दोगुंदक दोगुंदक सुर जिम नोगवे जी, मनवंछित काम नोग ॥ पुरुष पुरुष रतन जगें परगडो जी, कृतपुण्य पुण्य संयोग ॥रंग०॥१०॥ मधुरी मधुरी कही ए एकवीशमीजी, जयतसी ढाल सुरंग ॥ पदवी पदवी ऊंची हो पामी पुण्यथीजी, कृतपुण्य नाम तिणें चंग ॥ रंग० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कयवन्नो सुख नोगवे, सोनागी शिरदार ॥ माने श्रेणिक राजवी, माने अनय कुमार ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बावीशमी ॥ राग सोरठ ॥ निंडी वैरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन मनमां चिंतवे, मंत्री पासें हो कयव न्नो शाह के ॥ देखो पापिणी मोसली, मुने काढयो हो राखी घर मांह के ॥ १ ॥ अनयकुमर बुद्धि आ गली, बुद्धें जींत्या हो दाणवनें देव के ॥ माणस केहे मात्रमां, बुद्धि तूती हो सही सरसती देव के ॥अन० ॥ २ ॥ बुद्धि बलें राज्य जोगवे, सहु शंके हो राणाने राय के ॥ बुद्धियें सुरगुरु सारिखो, बुद्धें अमृत हो रसदूजणी गाय के ॥ अन० ॥ ३ ॥ शाह जाणी मं त्री नणी, कही वीतक हो सघली ते वात के ॥ मंत्री सर बुद्धि केलवी, कीयो देवल हो धवलरंग नांत के ॥ ॥ अन०॥ ४ ॥ चित्रामें अति चीतस्यो,नाम चउमुख हो कीधो मन कोड के ॥ मूरति मांही यक्षनी, रूपें रूडी हो कयवन्ना जोड के ॥ अन० ॥ ५ ॥ नगर ढंढेरो फेरीयो, ए जागतो हो यक्ष देव प्रत्यक्ष के ॥ पूजो अरचो एहनें, रोग टाले हो लइ जोग समक्ष के ॥ अन० ॥ ६ ॥ कयवन्नो मंत्रीसरू, बेहु उना हो मंमप मनरंग के ॥ नगरीनी नारी चली,टोलें टो लें हो लेइ सुतनें संग के ॥ अन० ॥ ७ ॥ गोरू आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पे सहु नारिनें, गोरु तेडी हो आवे दरबार के ॥ तू
से सहु जात्रा कीयां, रूसे नायां हो नारी सुत नार
के ॥ अन० ॥ ८ ॥ सघली आवी मलपती, गावे वा
वे हो करे जेगी जात्र के ॥ तूठजे बापजी मत रूसे,
मूके नैवेद्य हो आगल ते मात्र के ॥ अन० ॥ ए ॥
हवे झोकरडी झांगडी, जाली हार्थे हो झग मगती हा
ल के ॥ चारे वहू साथें मली, चाले आगें हो चार
न्हाना बाल के ॥ अन०॥ १०॥ हलवें हलवें हालती,
आवी पेठी हो सहु देवल मांहि के ॥ मूरती मोहन वें
लडी, बेठी दीठी हो मन धरीय उमाहि के ॥अन०॥
॥ ११ ॥ प्रत्यक्ष कयवन्नो तिसो, रूप रूडुं हो नख
शिख आकार के ॥ पंचरंग वाघो पहेरणे, कानें कुं
डल हो शोहे हियडे हार के ॥ अन०॥ १२ ॥ जोइ
जोइ वहू चारे हसी,मन उल्लस्यो हो विकस्यो वली
गात के ॥ नयणें नयण मली रह्यां, जोती करती हो
करे सफली जात के ॥ अन० ॥ १३ ॥ ते सूरत मूर
ति देखीनें,झोसी पोसी हो जगदीशनी नाल के ॥ पा
पें शंके पापिणी, रखे लागे हो इहां कोइ जंजाल के ॥
॥अन०॥१४॥ हियडुं हटक्युं नवि रहे, मुखें नाखे हो
नीशासा नारि के ॥ नयणें नीर झरे घणुं, जाणे त्रू

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टो हो मोतीनो हार के ॥ अन० ॥ १५ ॥ हियडुं हेजें पूरीयुं, नलें दीगो हो नरतार सरूप के ॥ ढाल बावीशमी जयतसी, मन मोह्युं हो देखी रूप अनूप के ॥ अन० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रमता हसता खेलता, चारे न्हाना बाल ॥ मू रति पासें आवीया, हरख्या नयण निहाल ॥ १ ॥ ॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ बाहु बलीनी ॥ बालु दक्षणरी चाकरी रे, बालु दखणीरो घाट ॥ साहिब पोढे जातिमां रे, धणलूं बाले खाट ॥ नमर लिंजालारां लेजो राज ॥ ए देशी ॥

॥ बोले बालक बोलडा रे, मुण मुण मीठी बाणी ॥ क्युं बेठा इहां आवीनें रे, रूठा मनरा दाणी ॥ १ ॥ ऊठो बाबाजी घरें आज्यो आज, थांने माउ रीजीरी आण, थांने दादीजीरी आण, थेंतो म करो खांचा ताण, थेंतो नाशि आया इण ठाण, थांने तेडी जास्यां प्राण ॥ ऊठो० ॥ २ ॥ कोई ताणे आंगुली रे, कोई ताणे हाथ ॥ कोई पग मूके नहीं रे, कोई घाले बाथ ॥ ऊठो० ॥ ३ ॥ एक कहे बापो माहरो रे, बीजानें दे गाल ॥ एक बेसे खोले आवीनें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, एक चुंबी दे गाल ॥कगो०॥४॥ एक कहे नेला बे सीनें रे, जिमशुं बापानी साथ॥ बीजो कहे जिमण न द्युं रे, देई मुख आडो हाथ ॥ कगो०॥ ५ ॥ एक कहे खास्यां लाडुवा रे,एक कहे खीर खांम॥ एक कहे सीरा लापसी रे,महोटी थाली मांम ॥ कगो० ॥६ ॥ एक कहे नेला बेसस्यां रे, आपें सघला आज ॥ बापो सहुनें सारिखो रे, एक पंथ दोइ काज ॥ कगो० ॥ ॥ ७ ॥ न्हानडीयानें बोलडें रे, लीधी सघली सार ॥ कयवन्नो प्रगट हूउ रें, मंत्री अनयकुमार ॥कगो०॥ ॥ ८ ॥ देखी धूजी ते मोकरी रे, वाय ऊकोल्युं ज्युं जाड ॥ मोसी पोसी बापडी रे, जाणे पडी चोरधाड ॥ कगो० ॥ ए॥ धूतारी ते मोसली रे, घरथी काढी कूट ॥ हरखी चारे पदमिणी रे,पाप कट्युं दुःख बूट ॥ कगो० ॥ १० ॥ हेजें मली निज नाहनें रे,टलीयां दुःख दोहग ॥ बेटा चारे फूटरा रे,प्रगट्युं जश सौनाग्य ॥कगो०॥११॥ कयवन्नो सुख नोगवे रे, रमणी सात अनूप ॥ इंड चंड पण देखतां रे, आणे मनमां चूप ॥ कगो० ॥ १२ ॥ दानें तूसे देवता रे, दानें दोलत होय ॥ दान वडुं संसारमां रे,जश गावे सहु कोय ॥ कगो० ॥ १३॥ कयवन्नें सुख नोगव्यां

रे, दान तणे सुपसाय ॥ नाम रह्युं त्रिहुं भुवनमां रे, मान्यो श्रेणिक राय ॥ करो० ॥ १४ ॥ सखरी सातें पदमिणी रे, भोगी नमर सुख लीन ॥ जयरंग ढाल शोहामणी रे, वीश उपर थइ तीन ॥ करो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीनो लीनो लीलमां, रहे सुखी दिन रात ॥ हवे सांभलजो चोंपथुं, धरम करमनी वात ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ कांची कली अनारकी रेहां, नमर रह्यो ललचाय ॥ मेरे ढोलणा ॥ए देशी॥

॥ तिण कालें ने तिण समे रेहां, जंगम तीरथ जेह ॥ श्रीमहावीरजी ॥ तीर्थ नाथ त्रिभुवन धणी रेहां, भांजे सयल संदेह ॥ श्री० ॥ १ ॥ पाप टले प्रभु पेखतां रेहां, नाम तणे बलिहार ॥ श्री० ॥ चिंतामणि सुरतरु समो रेहां, वंछित फल दातार ॥ श्री० ॥ २ ॥ सात हाथ प्रभु शोभता रेहां, धन्य जें लोचन दीठ ॥ श्री० ॥ चरण कमलनी रजें करी रेहां, करता पवित्र नूपीठ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ छत्रीश सहस सवि साधवी रेहां, चउद सहस्स अणगार ॥ श्री० ॥ गौतम स्वामी प्रमुख सहु रेहां, गणधर सा थें अगीयार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सती यतीश्वर महाव्रती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रेहां, सखरो प्रभु परिवार ॥ श्री० ॥ बे कर जोडी ना
वधुं रेहां, वंदना करुं वारंवार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ कोडा
कोडी केइ देवता रेहां, परिवरीया परिवार ॥ श्री०॥
पग तले नव सोवन तणां रेहां,कमल रचे सुर सार
॥ श्री० ॥ ६ ॥ अति उंचो रलीयामणो रे हां,सहस
जोयणनो दंम ॥ श्री० ॥ गयणांगण ध्वज लहलहे
रेहां, टाले कुमति पाखंम ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ग्रामागर
पुर विचरता रेहां, करता उग्र विहार ॥ श्री० ॥ नग
री राजगृही परिसरें रेहां, गुणशील वन छे सार
॥ श्री० ॥ ८ ॥ नंदन वन सम शोहतुं रेहां,वेली वृ
क्ष मांमवा सार ॥ श्री० ॥ कोयलडी टहुका करे रे
हां, नमर करे गुंजार ॥ श्री० ॥ ए ॥ स्वामी आवी
समोसर्या रेहां,निरवद्य सखरे गम ॥श्री०॥ मलिया
चउविह देवता रेहां, विरचे त्रिगडो ताम॥श्री०॥१०॥
समवसरण शोहामणुं रेहां, तरु अशोक विकसंत
॥ श्री० ॥ चउमुख चिहुं सिंहासणें रेहां, बेठा श्री
नगवंत ॥ श्री० ॥११॥ नामंमल पूठें नलुं रेहां, दी
पे तेज दिणंद ॥ श्री० ॥ तीन छत्र शिर शोनतां रे
हां, चामर ढाले इंद ॥ श्री० ॥ १२ ॥ वैर विरोध
सहु उपशमे रेहां, रीजे सुणी सुविचार ॥ श्री०॥ बेसे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बारे परखदा रेहां, सफल करे अवतार ॥ श्री० ॥ ॥ १३ ॥ चोत्रीश अतिशय शोभता रेहां, वचनाति शय पांत्रीश ॥श्री०॥ धर्म प्रकासे जगधणी रेहां,जग नायक जगदीश ॥श्री०॥१४॥ धन्य धन्य ते जग जीव डा रेहां, वाणी सुणी करे सेव ॥श्री०॥ ढाल चोवी शमी जयतसी रेहां,नमुं चोवीशमो देव॥श्री०॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ हरण वानरनी परें, नरतां लांबी फाल ॥ श्रे णिकनें वधामणी, आवी दीयें वनपाल ॥ १ ॥ श्रेणि क मनमां हरखियो, जिम घन आगम मोर ॥ मन वंछित वधामणी, दीधी तियांनें जोर ॥ २ ॥ राजा श्र णिक हरखियो, हरख्यो अभय कुमार ॥ शाह कय वन्नो हरखियो, हरख्यां लोक अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ राग खमायची ॥ महाराज चढे गजराज रथ तुरियां ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीश्रेणिक महाराज, मनोरथ फलीया ॥ नहें आज हूआं मो रंग रलीयां ॥ ए आंकणी ॥ जिनघर वंदन सजे सजाइ, उवटणां अंगें मलीयां ॥ अंजन मंजन स्नान सुगंधी, गंगाजल खल हलीयां ॥ श्री० ॥ ॥ १ ॥ पहेरयां हीर चीर पटंबर, हियडे हार रलत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लीयां ॥ चूआ चंदन अंग विलेपन, केशर कपूर मृग मद तलीयां ॥ श्री० ॥ २ ॥ पंच रंग फूल ज्युं चंगा वाधा, कुंमल कानें मणि जडीयां ॥ सहस दल नाल तिलक अनोपम, शिरमुकुट सोवन घडीयां ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बिहुं बांहे बहिरखा बांध्या, हाथें दोइ हथ सांकलीयां ॥ नंग जडित कनक मुद्दरडी, झलके दश कर अंगुलीयां ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पट हस्ती चडी चडयो मगधेसर, वड वडा जोधा साथें जुडीयां ॥ हय गय रह पायक परवरिया, जाणे इंद्र दल रूप डीयां ॥ श्री० ॥ ५ ॥ मेघाडंबर शिर छत्र बिराजे, झब झब तेजें झलमलीयां ॥ निर्मल चंद किरण ज्युं धवलां, बिहुं पासें चामर ढलीयां ॥ श्री० ॥ ६ ॥ फरहरे आगें नेजा ताजा, झुलमति घोडा हल ब लीयां ॥ याचक जय जय वाणी बोले, दानें मानें दारिद्र दलीयां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ नेरी नफेरी नादी न गारां, नवल नीशानें घाउ वलीयां ॥ वाजे वाजां गा ज अवाजां, ज्युं वरसालें वादलीयां ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मोतीडे वधावे गलीयें रली ए, गोरी रची रची गुह लीयां ॥ कोकिलकंठी मीठी वाणी, सोहव गावे सोह लीयां ॥ श्री० ॥ ए ॥ आगें वांसे वहे दल वादल,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्युं वरसालें वाद्दलीयां ॥ धूजे धरणी गिरिवर वड गढ, शेष नाग तो सल सलीयां ॥ श्री० ॥ १० ॥ दिशि दिशि देश नंगाणां पडीयां, सीमाडा सहु खल नली या ॥ केई नाग केई त्राग, केइ नमीया आवी कलि यां ॥ श्री० ॥ ११ ॥ साथें अंतेउर लीधां सघलां, श्रीअनय कुमर बुद्धि बलीया ॥ साथें साह वली क यवन्नो, सहुको प्रनु वंदण चलीयां ॥ श्री० ॥ १२॥ केइ हयगया गयगया केइ, केइ पाला केई चडियां ॥ केई पालखीयें केई रथ बेगा, जन सहु वंदण पर वरीयां ॥ श्री० ॥ १३ ॥ समोसरण देखत सहु वि कस्या, धन्य दिन आज वखत वलीयां ॥ हरख हि लोला चित्त कल्लोला, चंद चाहे सिंधु उछलीयां ॥ ॥ श्री० ॥ १४ ॥ प्रातीहारज आठे पेखत, कुमति गरव गुमान गलीया ॥ नव्य जीवांरा पातक गलियां, ज्युं पाणीमें कागलीयां ॥ श्री० ॥ १५ ॥ हाथीथी उतरीयो राजा, आगें पालो हुइ पलीयां, जिनवर द रिसण चाह धरंता, ढोल नहीं हूआं हलफलीयां ॥ ॥ श्री० ॥ १६ ॥ एक रंग हूआं पांचे इंद्रिय, वली मुनिशुं हिली मिलीयां ॥ चलीया रली ए नगवंत नेट ए, जीव तणां वंछित फलीयां ॥ श्री०॥१७॥ श्रीवीर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनेसर नयणें दीगं, दुःख दोहग दूरें टलीयां ॥ ज यतसी ढाल कही पञ्चवीशमी, सुणतां हरख सुमंग लीयां ॥ श्री० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचाभिगम साचवी, श्रीश्रेणिक महाराय ॥ देइ तीन प्रदक्षिणा, वांदे जिनवर पाय ॥ १ ॥ प्रभु आगल कर जोडीनें, बेगो श्रेणिक जाम ॥ नगर लोय पण वां दीने, सहु बेगां तिण ठाम ॥ २ ॥ जिनवर रूप शोहा मणुं, तन मन हुआ लय लीन ॥ मगन हूआ जग ती न तिम, ज्युं पाणीमें मीन ॥ ३ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ करडो तिहां कोटवाल ॥ ए देशी॥

॥ भाव भक्ति मन आणी, बेगी आगें बारे परखदा जी ॥ योजन गामिनी वाणी, मीठी देवे जिनवर देश नाजी ॥१॥ समकित धर्मनुं मूल, समकित पालो आ तम हित जणीजी ॥ अवर सहु आक तुल्य, सुरतरु स रिखुं समकेत जांखीयुंजी ॥ २॥ देव नमो अरिहंत, गुरु गिरुवा श्रीसाधुसु वांदीयेंजी ॥ केवलिभाषित तत्त्व, श्री जिनधर्म सूधो मन आणीयें जी ॥ ३ ॥ श्रावकनां व्रत बार, आठे प्रवचन माता साधुनीजी ॥ पालो निरतिचार, मनमां आणी सूधी भावनाजी ॥४॥ लाधो नरभव सार,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दश दृष्टांतें जहेतां दोहीलो जी ॥ आरज देश अवतार, जिनधर्म लाधो एलें म हारजो जी ॥५॥ ए संसार असा र, तन धन यौवन सघलां कारिमांजी ॥ कारिमो ए प रिवार,स्वारथ राचे सहु को आपणे जी ॥ ६ ॥ माता पिता सुत नार, ए पण सघलां शत्रु पणुं नजेजी ॥ ज्ञातासूत्र विचार, वली रायपसेणी उपांगमेंजी ॥ ७ ॥ चंचल नरभव आयु, जिम तरुवरनुं पाकुं पानडुं जी ॥ उत्तराध्ययननी साख, मान अणी जिम पाणी बिं डुउं जी ॥८॥ विरुआ विषय सवाद, पांचे इंद्रिय सब ल जगमां नडे जी ॥ पामे जग विखवाद, एक एक इं द्री परवश प्राणीयो जी ॥ ए ॥ देखी रूप पतं ग, नादें मृगलो रस वश माछलो जी ॥ पामे रंग विरंग, भमरो वासें फरसें हाथीयो जी ॥ १० ॥ शुभ मतिशुं प्रतिकूल, फलकिंपाक समां फल जेहनां जी ॥ भवतरुनां ए मूल, चार कषाय निवारो जिम त रो जी ॥ ११ ॥ म करो ममता संग, समता रसमां झीलो मल तजो जी ॥ रमतां दया रस रंग, मन ग मतां सुख पामो शाश्वतां जी ॥ १२ ॥ दान शीयल तप भाव, चारे गति छेदण चारे आदरो जी ॥ कूड

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कपट रोषनाव, छोडो जोडो मन वैरागशुं जी ॥१३॥ म करो पराइ तात, पारकी निंदा नारक गति दीयें जी ॥ धर्म ध्यान दिन रात, पालो निर्मल व्रत नियम आखडी जी ॥ १४ ॥ एकलो आव्यो जीव, परनवें प ण ए जाये एकलो जी ॥ तन धन सयण सदीव, सा थ न चाले को करणी विना जी ॥१५॥ ए संसार स्व रूप, जाणी प्राणी धर्म करो खरो जी ॥ जयतसी ढा ल अनूप, समजो बूझो ए बवीशमी जी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर वाणी सांनली, प्रति बूझ्या बहु लोक ॥ केइ श्रावक व्रत आदरे, केइ माहाव्रत जोग ॥१॥ व ली विशेष जिन देशना, मीठी लागें जोर ॥ कयवन्नो मन हरखियो, जिम घन गाजे मोर ॥ २ ॥ आज म नोरथ सवि फल्या, आज जनम मुज धन्य ॥ आज हूउं सुकृतारथो, इम उल्लस्यो कृतपुण्य ॥३॥ वांदी ने पूछे वली, मया करो महाराज ॥ में शुं दीधुं आ चर्युं, कहो पूरव नव आज ॥ ४ ॥ लोकालोक प्र काश कर, केवल ज्ञान अनंत ॥ कयवन्ना आगल क हे पूरव नव विरतंत ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल सत्तावीशमी, राग सिंधूडो ॥ एक लहरी ले गोरला ॥ ए देशी ॥

॥ शालीग्राम नामें गाम छे, नरीयुं धण कण सूत॥ वसे तिहां एक गोवालिणी, मोसी एक तस पूत ॥ १ ॥ दान धरम फल रूअडा, जश बोले सहु कोय ॥ भगवंत भांखे स्वयंमुखें, दान समुं नहीं कोय ॥ दा० ॥ २ ॥ धन पाखें ते मोकरी, करे परघर काम ॥ आथ पाखें आदर नहीं, पूछे न को नाम गाम ॥दा० ॥ ३ ॥ बेटो बालक न्हानडो, करी न सके काम नेट ॥ चारे परायां वाछडां, नीट चरे एम पेट ॥ दा०॥ ॥ ४ ॥ परव महोत्सव एक दिनें, रांधे घरघर खीर ॥ दीठां बालक जिमतां, हूउ मनमें दिलगीर ॥ दा० ॥ ॥ ५ ॥ खीर जिमण मनसा थइ, मांगे मातानें तीर ॥ हठ लेइ बेठो कहे, मा जिमण दे खीर ॥ दा० ॥६॥ समजायो समजे नहीं, जाणे नहीं घर सार ॥ हूई आमण दूमणी, नयण झरे जलधार ॥ दा० ॥ ७ ॥ मायडी कहे पूत माहेरा, घर नहीं कूशक जात ॥ ले करी लूखुं सूकुं जिमी, छोडी दे खीर वात ॥ दा० ॥ ॥ ८ ॥ कीडी मंकोडी त्रीया, हठ छोडे नहिं बाल ॥ रोवें आडो मांहीनें, छेडो मातानो जाल ॥दा०॥ए॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ए ॥ आवी पर उपगारिणी, पाडोसण मली चार ॥ बाल रोवाडे क्युं रोइनें, पूछयां कह्यो सुविचार ॥ ॥ दा० ॥ १० ॥ दूध दीधुं एकण त्रिया, बीजी शालि अखंड ॥ घी सुरहो त्रीजीयें दीयो, चोथी बूरा खांड ॥ दा० ॥ ११ ॥ खीर रांधी मीठी तिणें, मली रूडी सान्निधि ॥ कारण सहु मलियां पछी, तरत हुवे काम सिद्धि ॥ दा० ॥ १२ ॥ बेसाडी बालक जणी, मांही थाली स्नेह ॥ अमिय नजर नरी मायडी, खीर परीसे तेह ॥ दा० ॥ १३ ॥ अति उन्ही जाणी करी, देइ ठारे फूंक ॥ पण चतुराइ बालनी, न पडे खीरमां थूंक ॥ दा० ॥ १४ ॥ जननी कारण उपने, घरथी बाहिर जाय ॥ अचिरज एक हुउं तिसें, ते सुणजो चित्त लाय ॥ दा० ॥ १५ ॥ नवितव्यता वशें नीपजे, शुनाशुन कारज सिद्धि ॥ ढाल कही सत्तावीशमी, जयतसी निश्चल बुद्धि ॥ दा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उंच नीच कुल विहरतो, क्षीणदेह गुण गेह ॥ अतिथि एक आव्यो तिसें, जंगम तीरथ जेह ॥ १ ॥ पाप तरे ॥ उंच नीच कुल विहरता, मुनिवर महिमा पात्र ॥ आवि उना तेहनें घरे, जंगम तीरथ यात्र ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल अठावीशमी ॥ राग सोरठ ॥ राणां राजसी हो, मेवाडा महीपति हो, चित्रोडा गढपति हो, राजा देजो थारां गढपतियांने शीख ॥ ए देशी ॥

॥ मास खमणनें पारणें रे, लेतो शुद्ध आहार ॥ आव्यो वखतें ताणिनें रे, नलो हरख्यो बाल तिवार हो ॥ १ ॥ रूडा साधुजी हो, महोटा महंतजी हो, आज नलें आंगणडे पाउधार्या हो पूज्य ॥ ए आंकणी ॥ बे कर जोडी उभीनें रे, वांदे ऋषिना पाय ॥ तन विकस्युं मन उल्लस्युं रे, वली हियडे हरख न माय हो ॥रू० ॥ २ ॥ आदर मान दीये घणुं रे, धन्य धन्य तुं अणगार ॥ मुख कमल तुज निरखतां रे, महारो सफल हूउं अवतार हो ॥ रू० ॥ ३ ॥ मुह मांग्या पासा ढल्या रे, दूधें वूठा मेह ॥ घर बेठां सद्गुरु मल्यो रे, आज प्रगटी ऋद्धि सिद्धि गेह हो ॥रू० ॥ ४ ॥ आज मनो रथ सवि फल्या रे, सुरतरु फलियो गेह ॥ पाप कट्युं पुण्य प्रगटीयुं रे, चडयो हाथ चिंतामणि एह हो ॥रू० ॥ ५ ॥ सोवन पुरिषो चालतो रे, निर्मल नही दोष मात्र ॥ घरें बेठां नेटा हूई रे, एतो जंगम तीरथ यात्र हो ॥ रू० ॥ ६ ॥ गंगाजलमां झीलतां रे, हुआं निर्मल गात्र ॥ मनमोहन महिमानिलो रे, नलें नेट्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साधु सुपात्र हो ॥रू०॥७॥ दोहिली सामग्री ते जडी रे, आज जाग्युं मुज भाग्य ॥ थालमांहे कीधी लीहटी रे, कीधा खीर तणा त्रण भाग हो ॥रू०॥८॥ बालक बोल्यो भावशुं रे,स्वामी वोहोरो खीर खंम ॥ मुनिवर पडघो मांमीयो रे,जाणे धरम रतननो करंम हो ॥रू० ॥९॥ वोहोरावे हवे पहेलडो रे, खीर भाग धरी राग ॥ अल्प जाणीने वली तिणें रे, दीयो बीजो पण खीर भाग हो ॥ रू० ॥ १० ॥ उत्तम पात्र दीगो भलो रें, जाग्युं तेहनुं भाग्य ॥ वोहोरावे भावें चढयो रे,वली खीर तणो त्रीजो भाग हो ॥ रू० ॥ ११ ॥ पात्र दान फल तेहनें रे,महोटुं होवण हार ॥ अंतराय होशे ना कह्यां रे, तिण साधें न कह्यो नाकार हो ॥रू०॥१२॥ पाठांतरे ॥ पात्र दान फल रूअडुं रे, मत होजो अंत राय ॥ इणी परें ना न कही जती रे, पण लालच नहीं कांय हो ॥ रू०॥ १३ ॥ भाग्य योगें आवी मल्यो रे, उत्तम पात्र तत्काल ॥ दान दीधुं तिणें तिण परें रे, पूतें थाल रह्यो सुविशाल हो ॥ रू० ॥ १४ ॥ चित्त वित्त पात्र त्रणे मल्यां रे, वाव्युं सुक्षेत्रें बीज ॥ पुण्य कल्पवृक्ष ऊगीयो रे, हवे नीपजशे फल बीज हो ॥रू० ॥ १५ ॥ भाव घणे ते साधुनें रे, बार लगें पहुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चाइ ॥ करी वंदन पाछो वल्यो रे,वली वेगो पाछो आइ हो ॥रू०॥ १६ ॥ जननी फरी आवी घरें रे,थाली ते खाली देख ॥ तृप्तिकरण बालक नणी रे,वली खीर पीर से अशेष हो ॥ रू० ॥ १७ ॥ मातने वात न का कही रे, दीधुं ठानुं दान ॥ फल तो तेहीज नोगवे रे, जे देइ न करे गुमान हो ॥ रू० ॥ १८ ॥ देखी बालक जिमतो रे, माता चिंते धरी नेह ॥ एटली नूख खमे सदा रे, मुज धिग जमवारो एह हो ॥ रू०॥ १९ ॥ नजर लागी माता तणी रे, हुइ मूर्छा ततकाल ॥ काल कियो शुन ध्यानमां रे, हवे पाम्यो नोग रसाल हो ॥ रू० ॥ २० ॥ दान ठानुं न रहे कदी रे, महके फूलनी वास ॥ कहे वूढो वटाउडा रें, हुवे प्रगट्यो चंद्रप्रकाश हो ॥ रू० ॥ २१ ॥ दान सुपात्र दीयो सुणी रे, माता पाडोसण नार ॥ अनुमोदन करी ते हूइ रे, ए तुज नारी चार हो ॥ रू० ॥ २२ ॥ उत्तम कुल तुं अवतस्यो रे, उत्तम दान प्रनाव ॥ पुण्य कीधुं तें पूरवें रे,तिणें हुउ कृतपुण्य नाव हो ॥ रू० ॥ ॥ २३ ॥ त्रण्य नाग करी खीरना रे, दान दीधुं तिण मेल ॥ त्रण वेला ऋद्धि तें लही रे,पडी अंतराय तीन वेल हो ॥ रू० ॥ २४ ॥ नाव नलो आणी करी रे,दी

जें अढलक दान ॥ वडबीज ज्युं फल विस्तरे रे, वली लहीयें जोग प्रधान हो ॥ रू० ॥ २५ ॥ अनंत अनंत फल पामीयें रे,सुपात्र फले सुविशेष ॥ जयतसी ढा ल अष्ठावीशमी रे, इणमें मीन न मेष हो ॥रू०॥ २६॥

॥ दोहा ॥

॥ पर उपगारी परमगुरु, संशय भंजण हार ॥ कयवन्ना आगें कह्यो, पूरव भव सुविचार ॥ १ ॥ सु णी पूर्व भव आपणो,दान तणां फल देख ॥ कयव न्नो उत्सुक थयो, धर्म करण सुविशेष ॥ २ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥ राग मारुणी ॥ राम लंकागढ लीनो, लइने बिभीषण दीनो ॥ ए देशी ॥

॥ वीर तणी वाणी सुणी रे, मीठी अमिय समा न रे ॥ रंग भीनो साते धातडी रे, समज्यो चतुर सु जाण ॥ प्रतिबूझ्यो प्रति बूझ्यो हो कयवन्नो शाह ॥प्रति०॥ जाणीने जिन मारग सूधो, कयवन्नो शाह प्रति बूझ्यो ॥ए आंकणी॥१॥ बे कर जोडी वीनवे रे, ए संसार असार रे ॥ तारो तारो प्रभुजी मुज भणी रे, लेइश संयमभार रे ॥प्र०॥ २॥ वीर कहे देवाणुप्रिया रे, मा प्रतिबंध करेह रे ॥ जीवितमां जाये घडी रे, पाछी नावें तेह रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ अर्जुन फल आश्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

व तणां रे, नरक तणा दातार रे ॥ सखरां फल संव
र तणां रे, पामीजें नवपार रें ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वीर
जिनेसर वांदीनें रे, पोहोतो निज घरवास रे ॥ पुत्र
कलत्र मित्र मेलीनें रे, बोले एम उल्लास रे ॥ प्र०
॥ ५ ॥ सूधो धर्म में सर्दह्यो रे, जाण्यो अथिर संसा
र रे ॥ अधर्मथी दुःख उपजे रे, धर्में हूए उद्धार रे ॥
॥ प्र० ॥ ६ ॥ राग द्वेष रूडा नहिं रे, कडुआ कर्म वि
पाक रे ॥ विषयसुख विष सारिखां रे, विरूआ जेह
वा आक रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ को केहनो नहिं जगतमां
रे, कारिमुं सगपण एह रे ॥ वेला न लागे विहडतां
रे, तडके पडयो जेम त्रेह रे ॥ प्र०॥ ८ ॥ वीर जिनेस
र आगलें रे, हवे हुं लेइश दीख रे ॥ इंम कही बेटो
थापीयो रे, निजपाटें दइ शीख रे ॥प्र०॥ ए ॥ साते
खेत्रें वावीयुं रे, सखरे चित्तशुं बीज रे ॥ वूठो जिम
मेह धर्मनो रे, विण गाजे विण वीज रे ॥प्र०॥१०॥
दीन हीनने निस्तर्या रें, मांम्यो देदेकार रे ॥ अश
न पानें करी पोषीया रे, पहिराया परिवार रे ॥ प्र०
॥ ११ ॥ सुकुलिणी साते मली रे, कहे प्रीतमने वा
त रे ॥ तुम विण घर शोभे नहीं रे, जिम चंद विहू
णी रात रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तुम तननी अमें डांहडी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रें,केहनां घर सुत आथ रे ॥ दीक्षा लेशुं तुमशुं सही रे, सती न तजे पियु साथ रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ दीक्षा महोत्सव मांमीयो रे,आमंबर अति जोर रे ॥ वाजां वाजे अति घणां रे,जाणे गाजे घनघोर रे॥प्र०॥१४॥ रंगरली सुवधामणां रे, धवल मंगलगीत गान रे ॥ चारित्र रमणी परणवा रे,जाणे चढे वर जान रे॥प्र० ॥ १५ ॥ स्नान करी पहेरयां नलां रे, आनरणनें अलंकार रे ॥ सहस्स पुरुषनी वाहिनी रे,शीबिका बेसी श्रीकार रे ॥ प्र०॥ १६ ॥ सात नारी आप आठमो रें, राजगृहि नगर मोझार रे ॥ दीक्षा लेवा नीसरयो रे, साथें बहु परिवार रे ॥ प्र० ॥ १७॥ नर नारी राजा प्रजा रे, मुख बोले धन्य धन्य रे ॥ इंम आशीष सुणतो थको रे, निर्मलतर तन मन्न रे ॥ प्र० ॥ १८ ॥ तुरत आव्या वही पाधरा रे,समवसरण मझार रे ॥ पालखी थी ऊतरया रे, नारीने जरतार रे ॥ प्र० ॥ १ए ॥ वीर जिनेसर दरिसणें रे, पायो हरख अपार रे॥ पंचाभिगम साचवी रें, विनयवंत सुविचार रे ॥ प्र० ॥ २० ॥ सचित अचितड्व्य छोडीयां रे, एकंत करी मनरंग रे॥ कर जोडी शिर चाढिया रे, कीधो उत्तरासंग रे ॥ प्र० ॥ ॥ २१ ॥ वीर जिनेसर वांदीया रे,नारीशुं सुविनीत रे॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोच करी प्रभु स्वहथें रे, लीधी दीख पवित्त रे॥प्र०॥२२
पूरी सरस कहे जयतसी रे, ए कही उगणत्रीशमी ढाल रे॥ कयवन्नो व्रत आदरे रे, वांडु चरण त्रिकाल रे॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर मुनिवर वांदीनें, राजा प्रजा बहु लोक॥
सहु आव्या घर आपणें, सुखें वसे शुन योग ॥ १ ॥
कयवन्नो महोटो जती, पाले सखरी दीख ॥ ग्रहणाने आसेवनी, शीखे हितधरी शीख ॥ २ ॥ चारित्र लेइ चोंपशुं, पाले निरतिचार ॥ पांचे इंद्रिय वश करे, धन्य तेहनो अवतार ॥३ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥ राग धन्याश्री ॥ मो मनरो हेडाऊ हो मिसरि ठाकुर महिदरो ॥ अथवा ॥ नोलीडा हंसा रे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

॥ चारित्र पाले हो सूधुं सिंह ज्युं, धन्य कयवन्नो साध ॥ थविरां पासे हो सूत्र नणे नलां, शीखे अरथ अगाध ॥ चारि० ॥ १ ॥ जयणा करतो हो चाले मारगें, कन्नो रहे जोइ जीव ॥ जयणासेंती हो बेसे पूंजीनें, सूतां जयणा सदीव ॥ चा० ॥ २ ॥ जयणासेंती हो मुख साचुं चवे, न वदे मिरषा वाद ॥ जयणा करीनें हो जिमे सूजतुं, लूखुं अन्न निःस्वाद ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चा० ॥ ३ ॥ करे रखवाली हो नवे वाडनी,सखरुं पा
ले शील ॥ जिम रखवाले हो वनवाडी फले,माली पा
सें लील ॥चा०॥४॥ ममता निवारे हो समता आदरे,
न करे संनिधि संच ॥ तप जप किरिया हो खप आ
करी करे, पाले महाव्रत पंच ॥ चा० ॥ ५ ॥ दूषण
टाले हो लाग्युं जाणीनें, मिछाडुक्कड देय ॥ खाम
णां खामे हो पडिक्कमणुं करे, अतिचार आलोय ॥
चा० ॥ ६ ॥ मित्र शत्रु सरिखा हो माने साधुजी, तृ
ण मणि कंचन काय ॥ रज राज्य सरिखां हो लोन र
ती नही, निकलंक काचने पाच ॥ चा० ॥ ७ ॥ जणि
गुणी हूउं हो ते श्रुत केवली, चौदे पूरव धार ॥ तर
ण तारण हो ज्ञानी गुरु नलो, नहीं प्रमाद लगार
॥ चा० ॥ ८ ॥सद्गुरु संशय हो नांजे मन तणा, तु
रत उतारे पार ॥ बलिहारी जाउं हो एहवा साधुनी,
नाम लीयां निस्तार ॥ चा० ॥ ए ॥ संवेगी सोनागी
हो वैरागी वडो, धन्य धन्य ए अणगार ॥ महावीर
स्वामी हो स्वहथें दीखियो, गिणती चौद हजार ॥
चा०॥१०॥ साधु गुण गातां हो हीयुं उल्लसे, त्रीशमी
ढाल रसाल ॥ बे कर जोडी हो जयरंग इंम कहे, क
रुं वंदना त्रण काल ॥ चा० ॥ ११ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ कयवन्ने संयम ग्रह्यो, करतो उग्र विहार ॥
मासें करे मन रंगशुं, निर्दूषण आहार ॥ १ ॥
॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ राग धन्याश्री ॥ सुण बेहेनी, पीयुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य साधु नमुं कर जोडी,जेणे माया म मता छोडी जी॥ तप जप खप करी काया शोषी,होशे सिद्ध पडोशी जी ॥ध०॥१॥ महोटो मुनिवर श्रीकय वन्नो, धन्य धन्य सोवन वन्नो जी ॥ घणां वरस लगें संयम पाली, दूषण सघलां टाली जी ॥ ध० ॥ २ ॥ अतिचार आलोई नंदी, वीर जिनेसर वंदी जी ॥ अ ल्प आउखुं जाणी नाणी,लियुं अनशन नाव आणी जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ चौराशी लख जीव खमावी,चि दुं शरणें चित्त लावी जी ॥ सुरगति साहामा जोडया हाथो, कुंण लीये नरकशुं बाथो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ पंमित मरणें कालज कीधो, चाल्यो परमहंस सीधो जी ॥ नांग्या बहु नवनवना फेरा,दीधा सवारथें फेरा जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ तेत्रीश सागर आयु नोगवशे, स वारथथी चवशे जी ॥ माहाविदेहें नरनव लेशे, आ ठ करम तिहां दहशे जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ केवल पामी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पार उतरशे, अविचल शिव सुख वरशे जी ॥ धन्य कयवन्नो करी ए करणी, सुणतां हुवे पुण्य नरणी जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ जोगी जोगी हूआ नर जाजा, पण ए सहु शिरराजा जी ॥ उत्तम साधु तणा गुण गाया, अनंत लान सुख पाया जी ॥ ध० ॥ ॥ ८ ॥ दान तणुं फल प्रत्यक्ष देखी, द्यो दान सुविशेषी जी ॥ कपरें सूधी नावना नावो, ज्युं मन वंछित पावो जी ॥ ध० ॥ ए ॥ कवियण वचनें रचना कीधी, सरस चौपै ए सीधी जी ॥ मिछाडुक्कड अधिके उछे, में दीधो शुन शोचें जी ॥ ध० ॥ १० ॥ संवत सत्तरशें एकवीशें, बीकानेर सुजगीशें जी ॥ आदीश्वर मूलनायक सोहे, नर नारी मन मोहे जी ॥ ध० ॥ ११ ॥ ए संबंध रच्यो हित काजें, श्रीजिणचंद सूरिराजें जी ॥ नणतां गुणतां बहु सुखदायी, सुणजो चित्त लगाइ जी ॥ ध० ॥ १२ ॥ श्रीजिणचंद सूरि सुखदाइ, सुरतरु साख सवाइ जी ॥ वाचक श्री नयरंग विख्याता, वडवडा जस अवदाता जी ॥ ध० ॥ १३ ॥ विमल विनय तसु शिष्य बिराजे, वाचक अधिक दिवाजे जी ॥ श्रीधरम मंदिर वैरागी, तास शिष्य वड नागी जी ॥ ध० ॥ १४ ॥ महोपाध्याय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पदवी शोहे, संघ तणां मन मोहे जी ॥ सुगुरु पुण्य कलश शुभ नामें, जाणीता गाम गामें जी॥ध०॥१५॥ तास शिष्य जयतसी इंम बोले, नहीं कोइ दानने तो ले जी ॥ दान तणां फल दीसे चावां, दिन दिन अधिक दीवाजां जी ॥ध०॥१६॥ सरस ढाल न कांइं पडती, त्रीश उपर एक चडती जी ॥ पूरण सुणतां हियडुं विकसे, धर्म करण मन उल्लसे जी ॥ध०॥१७॥ इतिश्री कयवन्ना शाह शेठनी चोपाइ समाप्ता ॥

॥ इति कवि जयतसीकृत श्री कयवन्ना शाहनो रास संपूर्णः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ वैराग्य सद्याय प्रारंभः ॥

॥ श्रीसीमंधर साहेब सांभलो ॥ ए देशी ॥

॥ कां नवि चिंते हो चित्तमें जीवडा, आयु गले दिन रात ॥ वात विसारी रे गर्भ तणी सवे, कुण कुण ताहरी जात ॥कां०॥१॥ तुं मत जाणे रे ए सहु माहरां, कुण माता कुण तात ॥ आप स्वारथ ए सहु को मल्या, म क र पराइ रे वात ॥कां०॥२॥दोहिलो दिसे रे नव माणस तणो, श्रावक कुल अवतार ॥ प्राप्ति पूरी रे गुण गिरुआ तणी, नहीं तुज वारो वार ॥कां०॥३॥ पुण्य विहूणो रे दुःख पामे घणुं, दोष दीये किरतार ॥ आप कमाइ रें पू रव भव तणी, नवि संभारे गमार ॥कां०॥४॥ कठिन कर्मने रे अहनिश तुं करे, जेहना सबल विपाक ॥ हुं नवि जाणुं रे शीगत ताहरी, ते जाणे वीतराग ॥कां०॥५॥तुज देखंतां रे जोने जीवडा, केइ केइ गया नर नार ॥ एम जाणवुं रे निश्चें जायवुं, चेतन चेतो गमार ॥कां०॥६॥ तें सुख पाम्यां रें बहु रमणी तणां, अनंत अनंती रे वार ॥ लब्धि कहे रे जो जिनशुं रमे, तो सुख पामे अपार ॥७॥

॥ अथ परस्त्रीत्याग सद्याय ॥

॥ प्रभु साथें जो प्रीत वांछो तो, नारीसंग निवारो रे ॥ कपट निपटने कामणगारी ॥ निश्चें नरक दुआरो ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एहनी एह गत जाणो ॥ राजऋषि कोइ संदेह आणो॥ एहनी०॥ए आंकणी॥१॥ अबला एहवुं नाम धरावे, पण सबलाने समजावे रे ॥ हरि हर ब्रह्म पुरंदर देवा,ते पण दास कहावे ॥एहनी०॥२॥ पगले पगले नाम पल टावे,श्वास उसासें जूदी रे॥ गरज पडे त्यारें घेली थाये, काम सरे जाये कूदी रे ॥एहनी०॥३॥ जंघा चोरी मांस खवाडे,तोय न थाये तेहनी रे ॥ मुखनी मीठी दिलनी रे जूठी,कामिनी न थाये केहनीरे ॥एहनी०॥४॥करणी एहनी कही न जाये, कामण तणी गति न्यारी रे ॥ गायुं एहनुं जे नर गाशे,तेहने शिवगति वारीरे॥एहनी०॥५॥ जो लागी तो सर्वे लूंटे,रूठी राक्षस तोलें रे ॥इम जाणी ने अलगा रेहेजो,उदय रतन इम बोलेरे॥एहनी०॥६॥

॥ अथ स्त्रीवर्जन शिखामण सझाय ॥

॥ धर्म तणी जातां धरा, वचमांहे पाडे वाट ॥ लक्षि लीए सर्व लूंटीने,व्रतनी जे वहे उवाट ॥ बला हो,बहु बहु बोली बाल, जे अछता उपाये आल, जे वाघणथी विकराल,जे आपे मरण अकाल ॥ब०॥१॥ संसारें सहु सरिखुं नहीं,जोडे वसंतां जोय॥ एक वांको एक पाधरो,बोरडीयें कांटा जिम होय ॥ब०॥२॥ बला बला सहु को कहे,बोली बला बलवंत ॥ ए जेवी एके

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नहीं, जे बलें पाडी बलंत ॥ब०॥३॥ आखाढो गाढो बल्यो,केई बल्या नर कोड ॥ गुणवंतनुं पण नहीं गजुं,जे कृणमां लगाडे खोड ॥ ब० ॥४॥ उलाले आकाशमां एक,आंखें उलाले अनेक॥ महीयें पग मंमे नहीं वली, नासे विनय विवेक॥ब०॥५॥ जशोधर जिस्या जालमी, वली मुंज जिस्या महाराज ॥ पुण्यवंत परदेशी सारिखा,ते कांतायें हण्या निजकाज ॥ब०॥६॥ जोरावर जंबु जिस्या,वंकचूल सरिखा वीर ॥ समर्थ थूलिजद्र सारिखा, जेहनां नारियें न उताखां नीर ॥ब०॥७॥ शोल सती आदें थइ,महासती जग हितकार ॥ अनेक नर तेणें उद्धखा, रहनेमि आदें निरधार ॥ब०॥८॥ सुदर्शन बलतां नवि बल्यो, थयो केवल कमलाकंत ॥ पर मोदय पामे सही, जे पास एहने न पडंत ॥ब०॥ए॥

॥ अथ शीयलनी सद्याय ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ शीख सुणो पीउ माहरी रे, तुजने कहुं कर जोड ॥ धणरा ढोला ॥ प्रीत म कर परनारीशुं रे,आवें पग पग खोड ॥ध०॥ कह्युं मानो रे सुजाण, कह्युं मानो ॥ वरज्यां लागो मारा लाल, वरज्यां लागो, परनारीनो नेह डलो निवार ॥ धणरा ढोला ॥१॥ जीव तपे जिम वीजली रे,मनडुं न रहे गम॥ध०॥काया दाह मिटे नहीं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, गांठे न रहे दाम ॥ध०॥ श॥ नयणें नावे निद्डी रे, आवे पोहोर उद्वेग ॥ध०॥ गलीआरे नमतो रहे रे, लागुं लोक अनेक ॥ ध०॥ ३ ॥ धान न खाये ड्राप तो रे, दीठुं न रुचे नीर ॥ध०॥ नीसासा नाखे घणा रे, सांनल नणदीना वीर ॥ ध० ॥ ४ ॥ जूतलमें नि शि नीसरे रे,जूरी जूरी पिंजर होय ॥ ध० ॥ प्रेम त णे वश जे पडे रे,नेह गमे तव दोय ॥ध०॥५॥ रात दिवस मनमां रहे रे, जिणशुं अविहड नेह ॥ध०॥ वीसाख्या नवि वीसरे रे, दाजे क्षण क्षण देह ॥ध०॥ ॥ ६ ॥ माथे बदनामी चढे रे, लागे कोड कलंक ॥ ध० ॥ जीवितना संशय पडे रे, जूवो रावण पति लंक ॥ ध० ॥ ७ ॥ परनारीना संगथी रे, नलो न था ये नेत्र ॥ ध० ॥ जूवो कीचक नीमडे रे, दीधो कुंनी हेत्र ॥ ध०॥ ८ ॥ थाये लंपट लालची रे, घटती जा ये ज्योत ॥ ध० ॥ जींत न थाये तेहनी रे,जिम राय चंड्प्रद्योत ॥ध०॥ए॥ परनारी विष वेलडी रे, विष फ ल नाग संयोग ॥ ध० ॥ आदर करी जे आदरे रे,ते हने नवनय शोग ॥ ध० ॥ १० ॥ वाहाला माहारी वीनति रे, साची करीने जाण ॥ध०॥ कहे जिनहरष तुमें सांनलो रे, हियडे आणि मुजवाण ॥ध०॥११॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org